अध्याय ५

साक्षीगोपाल की लीलाएँ

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपनी पुस्तक *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में पाँचवे अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। याजपुर होते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु कटक नगर पहुँचे, जहाँ वे साक्षीगोपाल का मन्दिर देखने गये। वहाँ पर उन्होंने श्री नित्यानन्द प्रभु के मुख से साक्षीगोपाल की कथा सुनी।

एक बार विद्यानगर नामक स्थान में दो ब्राह्मण रहते थे, जिनमें से एक वृद्ध था और दूसरा नवयुवक। दोनों ब्राह्मण अनेक तीर्थस्थलों की यात्रा करते हुए अन्त में वृन्दावन पहुँचे। वृद्ध ब्राह्मण उस तरुण ब्राह्मण की सेवा से अत्यन्त प्रसन्न था; अतएव वह अपनी सबसे छोटी पुत्री का विवाह उसके साथ करना चाहता था। वृद्ध ब्राह्मण ने वृन्दावन के गोपाल-विग्रह के समक्ष तरुण ब्राह्मण को विवाह का वचन दिया। इस तरह गोपाल-विग्रह साक्षी रूप हुए। जब दोनों ब्राह्मण विद्यानगर लौटे, तो तरुण ब्राह्मण ने इस विवाह की बात उठाई, किन्तु वृद्ध ब्राह्मण ने अपने मित्रों तथा पत्नी के प्रभाव में आकर कहा कि उसे अपना वचन याद नहीं है। फलतः तरुण ब्राह्मण वृन्दावन लौट आया और उसने पूरी कहानी गोपालजी से कह सुनाई। इस तरह गोपालजी उस युवक की भक्ति से वशीभूत होकर उसके साथ दक्षिण भारत गये। गोपालजी तरुण ब्राह्मण के पीछे-पीछे जा रहे थे और वह तरुण ब्राह्मण उनके घुंघरुओं की रुनझुन-ध्वनि सुनता जा रहा था। जब विद्यानगर के सारे प्रतिष्ठित व्यक्ति एकत्र हो गये, तो गोपालजी ने वृद्ध ब्राह्मण के वचन की पुष्टि की। इस तरह विवाह सम्पन्न हो गया। बाद में उस देश के राजा ने गोपाल जी के लिए एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण करवाया।

इसके बाद कटक के राजा ने उड़ीसा के राजा पुरुषोत्तम देव का अपमान किया, क्योंकि उसने अपनी पुत्री का विवाह उससे करने से मना कर दिया और उसे भगवान् जगन्नाथ का झाड़ू लगाने वाला कहा। फलतः राजा पुरुषोत्तम ने भगवान् जगन्नाथ की सहायता से कटक के राजा से लड़ाई की और उसे हरा दिया। इस तरह उसने राजा की पुत्री तथा कटक का राज्य दोनों का भार संभाला। उस समय गोपालजी को राजा पुरुषोत्तम देव की भक्ति के वशीभूत होने के कारण कटक नगर ले आये गये।

यह कथा सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने भगवत्प्रेम के भावावेश में गोपाल-मन्दिर में दर्शन किये। कटक से चलकर वे भुवनेश्वर गये और वहाँ शिवजी का मन्दिर देखा। धीरे-धीरे वे कमलपुर पहुँचे और भार्गी नदी के तट पर वे शिवजी के मन्दिर आये, जहाँ उन्होंने अपना संन्यास-दण्ड नित्यानन्द प्रभु को दे दिया। किन्तु नित्यानन्द प्रभु ने उस दण्ड के तीन खण्ड करके उसे आठारनाला नामक स्थान में भार्गी नदी में फेंक दिया। अपना दण्ड पुनः प्राप्त न होने से क्रुद्ध होकर श्री चैतन्य महाप्रभु नित्यानन्द प्रभु का साथ छोड़कर अकेले ही जगन्नाथ मन्दिर का दर्शन करने चले गये।

पद्भ्यां चलन् यः प्रतिमा-स्वरूपो
ब्रह्मण्य-देवो हि शताह-गम्यम् ।
देशं ययौ विप्र-कृतेऽद्भुतेहं
तं साक्षि-गोपालमहं नतोऽस्मि ॥ १ ॥

पद्भ्याम्—दो पाँवों से; **चलन्**—चलकर; **यः**—जो; **प्रतिमा**—अर्चाविग्रह के; **स्वरूपः**—स्वरूप में; **ब्रह्मण्य-देवः**—ब्राह्मण संस्कृति के परम ईश्वर; **हि**—अवश्य; **शत-आह**—एक सौ दिनों में; **गम्यम्**—यात्रा करने के लिए; **देशम्**—देश; **ययौ**—गये; **विप्र-कृते**—एक ब्राह्मण के लाभ हेतु; **अद्भुत**—अद्भुत; **ईहम्**—गतिविधि; **तम्**—उनको; **साक्षि-गोपालम्**—साक्षीगोपाल, साक्षी के तौर पर प्रसिद्ध; **अहम्**—मैं; **नतः अस्मि**—सादर प्रणाम करता हूँ।

अनुवाद

मैं उन पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् (ब्रह्मण्य-देव) को सादर नमस्कार करता हूँ, जो एक ब्राह्मण पर उपकार करने के लिए साक्षीगोपाल के रूप में प्रकट हुए। उन्होंने १०० दिनों तक देश की पैदल यात्रा की। इस तरह उनकी लीलाएँ अद्भुत हैं।

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥२॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय—जय हो; **जय**—जय हो; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—श्री नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत प्रभु की जय हो और श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

चलिते चलिते आइला याजपुर-ग्राम ।
वराह-ठाकुर देखि' करिला प्रणाम ॥३॥

चलिते चलिते आइला याजपुर-ग्राम ।
वराह-ठाकुर देखि' करिला प्रणाम ॥ ३॥

चलिते चलिते—चलते चलते; **आइला**—पहुँचे; **याजपुर-ग्राम**—याजपुर ग्राम; **वराह-ठाकुर**—वराहदेव का मन्दिर; **देखि'**—देखकर; **करिला**—किया; **प्रणाम**—प्रणाम।

अनुवाद

चलते चलते श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी टोली सहित वैतरणी नदी के तट पर स्थित याजपुर गाँव आये। वहाँ उन्होंने वराहदेव का मन्दिर देखा और उन्हें नमस्कार किया।

नृत्य-गीत कैल प्रेमे बहुत स्तवन ।
याजपुरे से रात्रि करिला यापन ॥ ४ ॥

नृत्य-गीत कैल प्रेमे बहुत स्तवन ।
याजपुरे से रात्रि करिला यापन ॥ ४ ॥

नृत्य-गीत—नृत्य और गान; **कैल**—किया; **प्रेमे**—भगवत् प्रेम में; **बहुत**—विविध; **स्तवन**—स्तुतियाँ; **याजपुरे**—याजपुर गाँव में; **से रात्रि**—वह रात; **करिला**—किया; **यापन**—गुजारी।

अनुवाद

वराह देव के मन्दिर में श्री चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तन तथा नृत्य किया और प्रार्थनाएँ की। वह रात्रि उन्होंने मन्दिर में ही बिताई।

कटके आइला साक्षि-गोपाल देखिते ।
गोपाल-सौन्दर्य देखि' हैला आनन्दिते ॥ ५ ॥

कटके आइला साक्षि-गोपाल देखिते ।
गोपाल-सौन्दर्य देखि' हैला आनन्दिते ॥ ५ ॥

कटके—कटक नगर में; **आइला**—पहुँचे; **साक्षि-गोपाल**—साक्षीगोपाल; **देखिते**—देखने के लिए; **गोपाल**—गोपाल के अर्चाविग्रह का; **सौन्दर्य**—सौन्दर्य; **देखि'**—देखकर; **हैला**—हो गये; **आनन्दिते**—अत्यन्त आनन्दित, प्रसन्न।

अनुवाद

इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु कटक नामक नगर में साक्षीगोपाल का मन्दिर देखने गये। गोपाल विग्रह के सौन्दर्य को देखकर वे अत्यन्त प्रफुल्लित हुए।

प्रेमावेशे नृत्य-गीत कैल कत-क्षण ।
आविष्ट हञा कैल गोपाल स्तवन ॥ ६ ॥

प्रेमावेशे नृत्य-गीत कैल कत-क्षण ।
आविष्ट हञा कैल गोपाल स्तवन ॥ ६ ॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश में; **नृत्य-गीत**—नृत्य और गान; **कैल**—किया; **कत-क्षण**—

कुछ समय के लिए; **आविष्ट हञा**—अभिभूत होकर; **कैल**—की; **गोपाल स्तवन**—गोपाल की स्तुतियाँ।

अनुवाद

वहाँ पर श्री चैतन्य महाप्रभु कुछ समय तक कीर्तन तथा नृत्य करते रहे और भावाभिभूत होकर उन्होंने गोपाल की अनेक प्रकार से स्तुति की।

সেই রাত্রি তাহাঁ রহি' ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
গোপালের পূর্ব-কথা শুনে বহু রঙ্গে ॥৭॥

सेइ रात्रि ताहाँ रहि' भक्त-गण-सङ्गे ।
गोपालेर पूर्व-कथा शुने बहु रङ्गे ॥७॥

सेइ रात्रि—उसी रात; **ताहाँ**—वहाँ; **रहि'**—रहकर; **भक्त-गण-सङ्गे**—अन्य भक्तों के साथ; **गोपालेर**—भगवान् गोपाल की; **पूर्व-कथा**—पूर्व कथा; **शुने**—सुनी; **बहु**—बहुत; **रङ्गे**—हर्षपूर्वक।

अनुवाद

उस रात श्री चैतन्य महाप्रभु गोपाल के मन्दिर में रहे और सभी भक्तों सहित उन्होंने साक्षीगोपाल की कथा अत्यन्त उत्साहपूर्वक सुनी।

নিত্যানন্দ-গোসাঞি যবে তীর্থ ভ্রমিলা ।
সাক্ষি-গোপাল দেখিবারে কটক আইলা ॥৮॥

नित्यानन्द-गोसाञि यबे तीर्थ भ्रमिला ।
साक्षि-गोपाल देखिबारे कटक आइला ॥८॥

नित्यानन्द-गोसाञि—नित्यानन्द प्रभु; **यबे**—जब; **तीर्थ भ्रमिला**—तीर्थस्थानों पर गये; **साक्षि-गोपाल**—साक्षीगोपाल; **देखिबारे**—देखने के लिए; **कटक**—कटक नगर में; **आइला**—आये।

अनुवाद

इसके पूर्व जब नित्यानन्द प्रभु ने विभिन्न तीर्थस्थलों का दर्शन करने के लिए पूरे भारत का भ्रमण किया था, तो वे कटक स्थित साक्षीगोपाल का दर्शन करने भी आये थे।

সাক্ষি-গোপালের কথা শুনি, লোক-মুখে ।
সেই কথা কহেন, প্রভু শুনে মহা-সুখে ॥৯॥

সাক্ষি-গোপালের কথা শুনি, লোক-মুখে ।
সেই কথা কহেন, প্রভু শুনে মহা-সুখে ॥ ৯ ॥

সাক্ষি-গোপালের—সাক্ষীগোপাল की; **কথা**—कथा; **শুনি**—सुनकर; **লোক-মুখে**—लोगों के मुख से; **সেই কথা**—वह कथा; **কহেন**—नित्यानन्द प्रभु कहते हैं; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **শুনে**—सुनते हैं; **মহা-সুখে**—अत्यन्त प्रसन्न होकर।

अनुवाद

उस समय नित्यानन्द प्रभु ने साक्षीगोपाल की कथा उस नगर के लोगों से सुनी थी। अब उन्होंने वही कथा फिर सुनाई और चैतन्य महाप्रभु ने उस कथा को अत्यन्त सुखपूर्वक सुना।

तात्पर्य

साक्षीगोपाल मन्दिर भुवनेश्वर-खुर्दा रोड रेलवे जंक्शन तथा जगन्नाथ पुरी स्टेशन के बीच स्थित है। अर्चाविग्रह अब कटक में नहीं हैं, किन्तु जब नित्यानन्द प्रभु वहाँ गये थे तब वे वहाँ थे। कटक उड़ीसा में महानदी के किनारे स्थित है। जब साक्षीगोपाल को दक्षिण भारत के विद्यानगर से लाये गये थे, तो वे कुछ समय तक कटक में रहे थे। इसके बाद कुछ काल तक वे जगन्नाथ मन्दिर में रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि जगन्नाथ-मन्दिर में जगन्नाथ तथा साक्षीगोपाल के बीच *प्रेम-कलह* अर्थात् कुछ प्रेमपूर्ण मतभेद हुआ। इस प्रेम-कलह को सुलझाने के लिए उड़ीसा के राजा ने जगन्नाथ पुरी से ग्यारह मील की दूरी पर एक गाँव बसाया। यह गाँव सत्यवादी कहलाया और यहीं पर गोपाल को प्रतिष्ठित कर दिये गये। इसके बाद नया मन्दिर बनवाया गया। अब तो साक्षीगोपाल स्टेशन भी है और लोग साक्षीगोपाल का दर्शन करने के लिए सत्यवादी जाते हैं।

পূর্বে বিদ্যানগরের দুই ত' ব্রাহ্মণ ।
তীর্থ করিবারে দুঁহে করিলা গমন ॥১০॥

পূর্বে বিদ্যানগরের দুই ত' ব্রাহ্মণ ।
তীর্থ করিবারে দুঁহে করিলা গমন ॥ ১০ ॥

पूर्वे—पूर्व समय में; **विद्यानगरेर**—विद्यानगर नाम के नगर में; **दुइ**—दो; **त'**—निश्चित रूप से; **ब्राह्मण**—ब्राह्मण; **तीर्थ करिबारे**—तीर्थ करने के लिए; **दुँहे**—वे दोनों; **करिला**—करने लगे; **गमन**—यात्रा।

अनुवाद

प्राचीनकाल में दक्षिण भारत में विद्यानगर में दो ब्राह्मण थे, जिन्होंने विभिन्न तीर्थस्थानों के दर्शनार्थ लम्बी यात्रा की।

गया, वाराणसी, प्रयाग—सकल करिया ।
मथुराते आइला दुँहे आनन्दित हञा ॥११॥

गया, वाराणसी, प्रयाग—सकल करिया ।
मथुराते आइला दुँहे आनन्दित हञा ॥११॥

गया—गया नामक तीर्थस्थान; **वाराणसी**—बनारस अथवा काशी; **प्रयाग**—इलाहाबाद; **सकल**—सभी; **करिया**—यात्रा की; **मथुराते**—मथुरा; **आइला**—वे पहुँचे; **दुँहे**—दोनों; **आनन्दित**—प्रसन्न होकर; **हञा**—होकर।

अनुवाद

सर्वप्रथम वे गया गये, फिर काशी और तब प्रयाग। अन्त में वे अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक मथुरा आये।

वन-यात्राय वन देखि' देखे गोवर्धन ।
द्वादश-वन देखि' शेषे गेला वृन्दावन ॥१२॥

वन-यात्राय वन देखि' देखे गोवर्धन ।
द्वादश-वन देखि' शेषे गेला वृन्दावन ॥१२॥

वन-यात्राय—विविध वनों में यात्रा करने से; **वन देखि'**—वन देखते हुए; **देखे**—वे देखते हैं; **गोवर्धन**—गोवर्धन पर्वत; **द्वादश-वन देखि'**—वृन्दावन के बारह वन देखकर; **शेषे**—अन्त में; **गेला**—पहुँचे; **वृन्दावन**—वृन्दावन।

अनुवाद

मथुरा पहुँचकर उन्होंने वृन्दावन के विभिन्न वनों का दर्शन करना प्रारम्भ किया। तब वे गोवर्धन पर्वत आये। उन्होंने सारे बारहों वनों के दर्शन किये और अन्त में वृन्दावन नगरी पहुँचे।

तात्पर्य

यमुना नदी के पूर्व की ओर स्थित पाँच वनों के नाम हैं—भद्र, बिल्व, लोह, भाण्डीर तथा महावन। यमुना के पश्चिम की ओर स्थित सात वनों के नाम हैं—मधु, ताल, कुमुद, बहुला, काम्य, खदिर तथा वृन्दावन। इन सारे वनों के दर्शन के बाद वे दोनों यात्री पंचक्रोशी वृन्दावन पहुँचे। बारह वनों में से वृन्दावन नामक वन वृन्दावन नगरी से लेकर नन्द ग्राम तथा बरसाना तक ३२ मील दूरी तक फैला है और इसी में पंचक्रोशी वृन्दावन स्थित है।

वृन्दावने गोविन्द-स्थाने महा-देवालय ।
से मन्दिरे गोपालेर महा-सेवा हय ॥ १३॥

वृन्दावने गोविन्द-स्थाने महा-देवालय ।
से मन्दिरे गोपालेर महा-सेवा हय ॥ १३॥

वृन्दावने—पंचक्रोशी वृन्दावन में; **गोविन्द-स्थाने**—वर्तमान गोविन्द मन्दिर के स्थल पर; **महा-देव-आलय**—एक विशाल मन्दिर; **से मन्दिरे**—उस मन्दिर में; **गोपालेर**—गोपाल के अर्चाविग्रह की; **महा-सेवा**—भव्य सेवा; **हय**—है।

अनुवाद

पंचक्रोशी वृन्दावन ग्राम में, जहाँ अब गोविन्द मन्दिर स्थित है, पहले एक विशाल मन्दिर था जहाँ गोपाल की भव्य सेवा की जाती थी।

केशी-तीर्थ, कालीय-ह्रदादिके कैल स्नान ।
श्री-गोपाल देखि' ताहाँ करिला विश्राम ॥ १४॥

केशी-तीर्थ, कालीय-ह्रदादिके कैल स्नान ।
श्री-गोपाल देखि' ताहाँ करिला विश्राम ॥ १४॥

केशी-तीर्थ—यमुना तट पर केशी घाट नामक स्नान करने के स्थान पर; **कालीय-ह्रद**—यमुना तट पर कालिय घाट; **आदिके**—ऐसे विविध घाटों पर; **कैल**—किया; **स्नान**—स्नान; **श्री-गोपाल देखि'**—गोपाल मन्दिर जाकर; **ताहाँ**—वहाँ; **करिला**—लिया; **विश्राम**—विश्राम।

अनुवाद

यमुना नदी के किनारे स्थित विभिन्न घाटों में, यथा केशीघाट तथा

कालिय घाट में, स्नान करने के बाद वे दोनों यात्री गोपाल-मन्दिर में दर्शन करने गये। इसके बाद उन्होंने उस मन्दिर में विश्राम किया।

গোপাল-সৌন্দর্য দুঁহার মন নিল হরি' ।
সুখ পাঞা রহে তাহাঁ দিন দুই-চারি ॥ ১৫ ॥

গোপাল-সৌন্দর্য্য দুঁহার মন নিল হরি' ।
সুখ পাঞা রহে তাহাঁ দিন দুই-চারি ॥ ১৫ ॥

गोपाल-सौन्दर्य्य—गोपाल अर्चाविग्रह के सौन्दर्य ने; **दुँहार**—दोनों के; **मन**—मन; **निल**—लिए; **हरि'**—हर; **सुख पाञा**—यह दिव्य सुख अनुभव करके; **रहे**—रहे; **ताहाँ**—वहाँ उस मन्दिर में; **दिन**—दिन; **दुइ-चारि**—दो चार।

अनुवाद

गोपाल-विग्रह के सौन्दर्य ने उनके मनों को हर लिया और परम सुख का अनुभव करते हुए वे दोनों दो-चार दिन वहाँ रुके रहे।

দুই-বিপ্র-মধ্যে এক বিপ্র——বৃদ্ধ-প্রায় ।
আর বিপ্র——যুবা, তাঁর করেন সহায় ॥ ১৬ ॥

দুই-বিপ্র-মধ্যে এক বিপ্র——বৃদ্ধ-প্রায় ।
আর বিপ্র——য়ুবা, তাঁর করেন সহায় ॥ ১৬ ॥

दुइ-विप्र-मध्ये—दो ब्राह्मणों के बीच; **एक विप्र**—एक ब्राह्मण; **वृद्ध-प्राय**—वृद्ध प्राय; **आर विप्र**—दूसरा ब्राह्मण; **य़ुवा**—युवा; **ताँर**—वृद्ध ब्राह्मण की; **करेन**—करता है; **सहाय**—सहायता।

अनुवाद

दोनों ब्राह्मणों में एक वृद्ध था और दूसरा तरुण। यह तरुण व्यक्ति वृद्ध ब्राह्मण की सहायता कर रहा था।

ছোট-বিপ্র করে সদা তাঁহার সেবন ।
তাঁহার সেবায় বিপ্রের তুষ্ট হৈল মন ॥ ১৭ ॥

ছোট-বিপ্র করে সদা তাঁহার সেবন ।
তাঁহার সেবায় বিপ্রের তুষ্ট হৈল মন ॥ ১৭ ॥

छोट-विप्र—छोटा ब्राह्मण; **करे**—करता है; **सदा**—सदा; **ताँहार**—वृद्ध ब्राह्मण की; **सेवन**—सेवा; **ताँहार**—उसकी; **सेवाय**—सेवा से; **विप्रेर**—वृद्ध ब्राह्मण का; **तुष्ट**—सन्तुष्ट; **हैल**—हो गया; **मन**—मन।

अनुवाद

निस्सन्देह तरुण ब्राह्मण वृद्ध की सतत सेवा करता था और वह वृद्ध ब्राह्मण उसकी सेवा से सन्तुष्ट होने के कारण उससे प्रसन्न था।

विप्र बले—तुमि मोर बहु सेवा कैला ।
सहाय हञा मोरे तीर्थ कराइला ॥ १८॥

विप्र बले—तुमि मोर बहु सेवा कैला ।
सहाय हञा मोरे तीर्थ कराइला ॥ १८॥

विप्र बले—वृद्ध ब्राह्मण कहता है; **तुमि**—तुमने; **मोर**—मेरी; **बहु**—बहुत; **सेवा**—सेवा; **कैला**—की है; **सहाय**—सहायक; **हञा**—बनकर; **मोरे**—मुझे; **तीर्थ**—तीर्थ; **कराइला**—करवाया है।

अनुवाद

बूढ़े व्यक्ति ने उस तरुण से कहा, "तुमने तरह-तरह से मेरी सेवा की है और इन सारे तीर्थस्थानों की यात्रा करने में मेरी सहायता की है।

पुत्रेओ पितार ऐछे ना करे सेवन ।
तोमार प्रसादे आमि ना पाइलाम श्रम ॥ १९॥

पुत्रेओ पितार ऐछे ना करे सेवन ।
तोमार प्रसादे आमि ना पाइलाम श्रम ॥ १९॥

पुत्रेओ—मेरा अपना पुत्र भी; **पितार**—पिता की; **ऐछे**—इस प्रकार; **ना**—नहीं; **करे**—करता है; **सेवन**—सेवा; **तोमार**—तुम्हारी; **प्रसादे**—कृपा से; **आमि**—मैंने; **ना**—नहीं; **पाइलाम**—पाई; **श्रम**—थकावट।

अनुवाद

"मेरा पुत्र भी ऐसी सेवा नहीं करता। तुम्हारी दया से मुझे यात्रा में कोई थकान नहीं हुई।

कृतघ्नता हय तोमाय ना कैले सम्मान ।
अतएव तोमाय आमि दिब कन्या-दान ॥२०॥

कृतघ्नता हय तोमाय ना कैले सम्मान ।
अतएव तोमाय आमि दिब कन्या-दान ॥ २० ॥

कृत-घ्नता—कृतघ्नता; **हय**—यह है; **तोमाय**—तुम्हारी ओर; **ना**—नहीं; **कैले**—यदि करूँ; **सम्मान**—सम्मान; **अतएव**—अतएव; **तोमाय**—तुम्हें; **आमि**—मैं; **दिब**—दूँगा; **कन्या-दान**—अपनी पुत्री कन्यादान में।

अनुवाद

"यदि मैं तुम्हारा आदर न करूँ, तो मैं कृतघ्न माना जाऊँगा। अतएव मैं वचन देता हूँ कि मैं तुम्हें अपनी कन्या दान में दूँगा।"

छोट-विप्र कहे, "शुन, विप्र-महाशय ।
असम्भव कह केने, येइ नाहि हय ॥२१॥

छोट-विप्र कहे, "शुन, विप्र-महाशय ।
असम्भव कह केने, येइ नाहि हय ॥ २१ ॥

छोट-विप्र—युवा ब्राह्मण; **कहे**—उत्तर देता है; **शुन**—सुनो; **विप्र-महाशय**—विप्र महाशय; **असम्भव**—असम्भव; **कह**—आप कहते हैं; **केने**—क्यों; **येइ**—जो; **नाहि**—नहीं; **हय**—होता है।

अनुवाद

तरुण ब्राह्मण ने कहा, "हे भद्र ब्राह्मण, कृपया मेरी बात सुनें। आप कुछ असम्भव बात कर रहे हैं। ऐसा कभी होता नहीं।

महा-कुलीन तुमि—विद्या-धनादि-प्रवीण ।
आमि अकुलीन, आर धन-विद्या-हीन ॥२२॥

महा-कुलीन तुमि—विद्या-धनादि-प्रवीण ।
आमि अकुलीन, आर धन-विद्या-हीन ॥ २२ ॥

महा-कुलीन—अत्यन्त कुलीन; **तुमि**—आप; **विद्या**—विद्या; **धन-आदि**—धन आदि; **प्रवीण**—धनवान; **आमि**—मैं; **अकुलीन**—कुलीन नहीं; **आर**—और; **धन-विद्या-हीन**—धन तथा विद्या से रहित।

अनुवाद

"आप उच्च कुल के व्यक्ति हैं, सुशिक्षित हैं और अत्यन्त धनी हैं। और मैं न तो उच्च कुल का हूँ, न ही मेरे पास उत्तम शिक्षा है, न ही धन है।

तात्पर्य

पुण्यकर्मों के कारण मनुष्य चार प्रकार के ऐश्वर्यों से युक्त हो सकता है—उसका जन्म उच्च कुल में हो सकता है, वह सुशिक्षित हो सकता है, वह अत्यन्त सुन्दर हो सकता है या धनवान हो सकता है। ये हैं पूर्वजन्म में सम्पन्न पुण्यकर्मों के लक्षण। आज भी भारत में उच्च कुल वाले कभी साधारण कुल में विवाह नहीं करते। भले ही जाति वही हो, किन्तु अपनी कुलीनता बनाये रखने के लिए ऐसे विवाह नहीं किये जाते। कोई निर्धन व्यक्ति किसी धनी व्यक्ति की कन्या से विवाह करने का साहस नहीं करता। इसीलिए जब वृद्ध ब्राह्मण ने तरुण ब्राह्मण को अपनी कन्या देने का प्रस्ताव रखा, तो तरुण ब्राह्मण को विश्वास नहीं हुआ कि ऐसा विवाह सम्भव होगा। इसीलिए उसने वृद्ध ब्राह्मण से कहा कि आप ऐसी *असम्भव* बात का प्रस्ताव क्यों कर रहे हैं। ऐसा नहीं सुना जाता कि कोई कुलीन व्यक्ति अपनी कन्या किसी अशिक्षित तथा निर्धन व्यक्ति को दान में दे।

कन्या-दान-पात्र आमि ना हइ तोमार ।
कृष्ण-प्रीत्ये करि तोमार सेवा-व्यवहार ॥२३॥

कन्या-दान-पात्र आमि ना हइ तोमार ।
कृष्ण-प्रीत्ये करि तोमार सेवा-व्यवहार ॥ २३ ॥

कन्या-दान-पात्र—किसी लड़की के लिए योग्य वर; **आमि**—मैं; **ना**—नहीं; **हइ**—हूँ; **तोमार**—आपकी; **कृष्ण-प्रीत्ये**—मात्र कृष्ण की तुष्टि के लिए; **करि**—करता हूँ; **तोमार**—आपकी; **सेवा**—सेवा का; **व्यवहार**—व्यवहार।

अनुवाद

"हे महोदय, मैं आपकी कन्या के उपयुक्त वर नहीं हूँ। मैं तो केवल कृष्ण की तुष्टि के लिए आपकी सेवा कर रहा हूँ।

तात्पर्य

दोनों ब्राह्मण शुद्ध वैष्णव थे। तरुण ब्राह्मण वृद्ध की विशेष देखरेख केवल

कृष्ण की प्रसन्नता के लिए कर रहा था। *श्रीमद्भागवत* (११.१९.२१) में भगवान् कृष्ण कहते हैं—*मद्भक्तपूजाभ्यधिका*—"मेरे भक्त की सेवा करना श्रेयस्कर है।" अतएव चैतन्य महाप्रभु के गौड़ीय-वैष्णव दर्शन के अनुसार भगवान् के दास का दास होना श्रेयस्कर है। मनुष्य को सीधे कृष्ण की सेवा करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। एक शुद्ध वैष्णव कृष्ण के दास की सेवा करता है और अपने आपको कृष्ण के दास का दास समझता है। इससे कृष्ण प्रसन्न होते हैं। श्रील नरोत्तम दास ठाकुर इस सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं—*छाड़िया वैष्णवसेवा निस्तार पेयेछे केबा।* मुक्त वैष्णव की सेवा किये बिना प्रत्यक्ष रीति से कृष्ण की सेवा करके मुक्ति प्राप्त नहीं की जा सकती। अत: कृष्ण के दास की सेवा करनी ही होगी।

ব্রাহ্মণ-সেবায় কৃষ্ণের প্রীতি বড় হয় ।
তাঁহার সন্তোষে ভক্তি-সম্পদ্বাড়য়'' ॥২৪॥

ब्राह्मण-सेवाय कृष्णेर प्रीति बड़ हय ।
ताँहार सन्तोषे भक्ति-सम्पद्बाड़य" ॥ २४॥

ब्राह्मण-सेवाय—ब्राह्मण की सेवा करने से; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण की; **प्रीति**—प्रेम, तुष्टि; **बड़**—बहुत; **हय**—होती है; **ताँहार सन्तोषे**—भगवान् को प्रसन्न करने से; **भक्ति**—भक्ति का; **सम्पद्**—ऐश्वर्य; **बाड़य**—बढ़ता है।

अनुवाद

"भगवान् कृष्ण ब्राह्मणों की सेवा करने से अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और जब भगवान् प्रसन्न होते हैं, तो भक्ति संपदा बढ़ती है।"

तात्पर्य

इस सम्बन्ध में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टीका है कि तरुण ब्राह्मण ने वृद्ध ब्राह्मण की सेवा कृष्ण को प्रसन्न करने के उद्देश्य से की। यह कोई सामान्य सांसारिक व्यवहार नहीं था। वैष्णव की सेवा किये जाने से कृष्ण प्रसन्न होते हैं। चूँकि तरुण ब्राह्मण ने वृद्ध ब्राह्मण की सेवा की, इसलिए भगवान् गोपाल ने दोनों भक्तों का मान बनाये रखने के लिए विवाह-समझौते का साक्षी बनना मंजूर किया। यदि यह दो वैष्णवों के बीच की बात न होती, तो श्री चैतन्य महाप्रभु कभी भी वैवाहिक सम्बन्धों की बात सुनना पसन्द न करते। वैवाहिक

प्रबन्ध तथा उत्सव शास्त्रों के कर्मकाण्ड विभाग से सम्बन्धित है। किन्तु वैष्णव किसी प्रकार के कर्मकाण्ड में रुचि नहीं लेते। श्रील नरोत्तम दास ठाकुर कहते हैं—*कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड केवल विषेर भाण्ड।* वैष्णव के लिए वेदों के कर्मकाण्ड तथा ज्ञानकाण्ड प्रकरण अनावश्यक हैं। अक सच्चा वैष्णव इन प्रकारणों को विष-पात्र (*विषेर भाण्ड*) मानता है। कभी-कभी हम अपने शिष्यों के विवाह उत्सव में भाग लेते हैं, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि कर्मकाण्ड के कार्यों में हमारी रुचि है। कभी-कभी वैष्णव दर्शन को न समझने के कारण कोई बाहर का व्यक्ति ऐसे कार्य की आलोचना कर बैठता है। वह कहता है कि संन्यासी को एक तरुण तथा तरुणी के विवाह में भाग नहीं लेना चाहिए। किन्तु यह कर्मकाण्ड का कार्य नहीं है, क्योंकि हमारा उद्देश्य कृष्णभावनामृत आन्दोलन का प्रसार करना है। हम सामान्य जनता को कृष्णभावनामृत ग्रहण करने की सारी सुविधाएँ प्रदान करते हैं और भगवान् की सेवा में भक्तों के चित्त को एकाग्र करने के लिए कभी-कभी विवाह की अनुमति दी जाती है। हमने अनुभव किया है कि ऐसे विवाहित दम्पति आन्दोलन की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सेवा करते हैं। अतएव यदि संन्यासी किसी विवाह उत्सव में सम्मिलित हो, तो इसका गलत अर्थ नहीं लगाना चाहिए। श्री चैतन्य महाप्रभु तथा नित्यानन्द प्रभु को उस तरुण ब्राह्मण तथा उस वृद्ध ब्राह्मण की कन्या के विवाह के विषय में सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

बड़-विप्र कहे,—"तुमि ना कर संशय ।
तोमाके कन्या दिब आमि, करिल निश्चय" ॥ २५ ॥

बड़-विप्र—वृद्ध ब्राह्मण; **कहे**—उत्तर देता है; **तुमि**—तुम; **ना**—नहीं; **कर**—करो; **संशय**—संशय; **तोमाके**—तुम्हें; **कन्या**—कन्या; **दिब**—दूँगा; **आमि**—मैंने; **करिल**—कर लिया है; **निश्चय**—निश्चय।

अनुवाद

उस वृद्ध ब्राह्मण ने कहा, "बेटे, तुम मुझ पर सन्देह मत करो। मैं तुम्हें कन्यादान दूँगा। मैंने पहले ही यह निश्चय कर लिया है।"

ছোট-বিপ্র বলে,—"তোমার স্ত্রী-পুত্র সব ।
বহু জ্ঞাতি-গোষ্ঠী তোমার বহুত বান্ধব ॥ ২৬ ॥

ছোট-বিপ্র বলে,—"তোমার স্ত্রী-পুত্র সব ।
বহু জ্ঞাতি-গোষ্ঠী তোমার বহুত বান্ধব ॥ ২৬ ॥

छोट-विप्र—युवा ब्राह्मण; **बले**—कहता है; **तोमार**—आपके; **स्त्री-पुत्र**—पत्नी और पुत्र; **सब**—सब; **बहु**—बहुत से; **ज्ञाति**—वंशज; **गोष्ठी**—समूह; **तोमार**—आपके; **बहुत**—बहुत से; **बान्धव**—मित्र।

अनुवाद

तरुण ब्राह्मण बोला, "आपके पत्नी तथा पुत्र हैं तथा आपके अनेक परिजन तथा मित्र हैं।

তা'-সবার সম্মতি বিনা নহে কন্যা-দান ।
রুক্মিণীর পিতা ভীষ্মক তাহাতে প্রমাণ ॥ ২৭ ॥

তা'-সবার সম্মতি বিনা নহে কন্যা-দান ।
রুক্মিণীর পিতা ভীষ্মক তাহাতে প্রমাণ ॥ ২৭ ॥

ता'-सबार—उन सबकी; **सम्मति**—अनुमति; **विना**—बिना; **नहे**—नहीं; **कन्या-दान**—कन्यादान; **रुक्मिणीर**—रानी रुक्मिणी; **पिता**—पिता; **भीष्मक**—भीष्मक; **ताहाते**—उसका; **प्रमाण**—प्रमाण।

अनुवाद

"अपने सारे मित्रों तथा परिजनों की सम्मति के बिना आप अपनी कन्या का दान मुझे नहीं दे सकते। कृपया महारानी रुक्मिणी तथा उनके पिता भीष्मक की कथा पर विचार करें।

ভীষ্মকের ইচ্ছা,—কৃষ্ণে কন্যা সমর্পিতে ।
পুত্রের বিরোধে কন্যা নারিল অর্পিতে" ॥ ২৮ ॥

ভীষ্মকের ইচ্ছা,—কৃষ্ণে কন্যা সমর্পিতে ।
পুত্রের বিরোধে কন্যা নারিল অর্পিতে" ॥ ২৮ ॥

भीष्मकेर—राजा भीष्मक की; **इच्छा**—इच्छा; **कृष्णे**—कृष्ण से; **कन्या**—कन्या;

समर्पिते—समर्पण करने; **पुत्रेर**—उसके पुत्र के; **विरोधे**—विरोध से; **कन्या**—कन्या; **नारिल**—सक्षम न था; **अर्पिते**—देना।

अनुवाद

"राजा भीष्मक अपनी कन्या रुक्मिणी का दान कृष्ण को करना चाहते थे, किन्तु उनके बड़े पुत्र रुक्मी ने विरोध किया। अतएव वे अपना निर्णय पूरा नहीं कर सके।"

तात्पर्य

श्रीमद्भागवत (१०.५२.२५) में कहा गया है :

बन्धूनाम् इच्छताम् दातुं कृष्णाय भगिनीं नृप।
ततो निवार्य कृष्ण-द्विड रुक्मी चैद्यम् अमन्यत्॥

विदर्भराज भीष्मक अपनी पुत्री रुक्मिणी को कृष्ण को देना चाहते थे, किन्तु उनके पाँच पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र रुक्मी ने इसका विरोध किया। अतएव उन्होंने अपना निर्णय बदल दिया और रुक्मिणी को चेदि-नरेश शिशुपाल को देने का निश्चय किया, जो कृष्ण का चचेरा भाई था। किन्तु रुक्मिणी ने एक चाल सोची—उसने पत्र भेजकर कृष्ण से विनती की कि वे उसका हरण करें। अतएव अपनी महान् भक्त रुक्मिणी को प्रसन्न करने के लिए कृष्ण ने उसका हरण किया। इससे कृष्ण तथा विरोधी दल के बीच, जिसका अगुआ रुक्मिणी का भाई रुक्मी था, विकट युद्ध हुआ। रुक्मी पराजित हुआ और कृष्ण को कटु वचन कहने के कारण वह मारा जाने वाला ही था कि रुक्मिणी के अनुनय-विनय पर उसे छोड़ दिया गया। किन्तु कृष्ण ने अपनी तलवार से रुक्मी के सिर के बाल छील दिये। यह बलराम को अच्छा नहीं लगा, इसलिए रुक्मिणी को खुश करने के लिए उन्होंने कृष्ण को फटकारा।

बड़-विप्र कहे,—"कन्या मोर निज-धन ।
निज-धन दिते निषेधिबे कोन्जन ॥२९॥

बड़-विप्र कहे,—"कन्या मोर निज-धन ।
निज-धन दिते निषेधिबे कोन् जन ॥ २९॥

बड़-विप्र कहे—वृद्ध ब्राह्मण कहता है; **कन्या**—कन्या; **मोर**—मेरी; **निज-धन**—निजी

सम्पत्ति; **निज-धन**—अपनी सम्पत्ति; **दिते**—देना; **निषेधिबे**—विरोध करेगा; **कोन्**—कौन; **जन**—व्यक्ति।

अनुवाद

वृद्ध ब्राह्मण ने कहा, "मेरी पुत्री मेरी निजी सम्पत्ति है। यदि मैं किसी को अपनी सम्पत्ति देना चाहूँ, तो किसमें शक्ति है कि मुझे रोक सके?

तोमाके कन्या दिव, सबाके करि' तिरस्कार ।
संशय ना कर तुमि, करह स्वीकार'' ॥३०॥

तोमाके कन्या दिब, सबाके करि' तिरस्कार ।
संशय ना कर तुमि, करह स्वीकार" ॥ ३० ॥

तोमाके—तुम्हें; **कन्या**—कन्या; **दिब**—दूँगा; **सबाके**—अन्य सभी; **करि'**—करके; **तिरस्कार**—परवाह न करके; **संशय**—संशय; **ना**—न; **कर**—करो; **तुमि**—तुम; **करह**—करो; **स्वीकार**—स्वीकार।

अनुवाद

"प्रिय बालक, मैं तुम्हें अपनी कन्या दान करूँगा और मैं अन्यों की चिन्ता नहीं करूँगा। तुम इसमें मुझ पर सन्देह मत करो। तुम मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लो।"

छोट-विप्र कहे,—''यदि कन्या दिते मन ।
गोपालेर आगे कह ए सत्य-वचन'' ॥३१॥

छोट-विप्र कहे,—"यदि कन्या दिते मन ।
गोपालेर आगे कह ए सत्य-वचन" ॥ ३१ ॥

छोट-विप्र कहे—युवा ब्राह्मण उत्तर देता है; **यदि**—यदि; **कन्या**—कन्या; **दिते**—दान करने के लिए; **मन**—मन है; **गोपालेर**—गोपाल विग्रह के; **आगे**—समक्ष; **कह**—कहो; **ए**—ये; **सत्य-वचन**—सत्य वचन।

अनुवाद

तरुण ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "यदि आपने अपनी तरुण कन्या मुझे देने का निश्चय कर लिया है, तो गोपाल-विग्रह के सामने चलकर ऐसा कहें।"

गोपालेर आगे विप्र कहिते लागिल ।
'तुमि जान, निज-कन्या इहारे आमि दिल' ॥३२॥

गोपालेर आगे विप्र कहिते लागिल ।
'तुमि जान, निज-कन्या इहारे आमि दिल' ॥ ३२॥

गोपालेर आगे—गोपाल विग्रह के समक्ष; **विप्र**—वृद्ध ब्राह्मण; **कहिते**—कहने; **लागिल**—लगा; **तुमि जान**—हे प्रभु, कृपया जान लें; **निज-कन्या**—मेरी अपनी कन्या; **इहारे**—इस युवक को; **आमि**—मैंने; **दिल**—दान में दे दी है।

अनुवाद

उस वृद्ध ब्राह्मण ने गोपाल के समक्ष आकर कहा, "हे प्रभु, आप साक्षी हैं कि मैंने अपनी कन्या इस लड़के को दे दी है।"

तात्पर्य

भारतवर्ष में अब भी मौखिक रूप से कन्यादान दिये जाने के लिए वचन देने का प्रचलन है। यह *वाग्दत्त* कहलाता है। इसका अर्थ यह है कि कन्या के पिता, भाई या अभिभावक ने यह वचन दिया है कि इस कन्या का अमुक व्यक्ति के साथ विवाह होगा। फलस्वरूप उस कन्या का विवाह किसी अन्य के साथ नहीं किया जा सकता। वह अपने पिता या अभिभावक के सत्यवचन से किसी के लिए सुरक्षित हो जाती है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जहाँ कन्या की बाल्यावस्था में उसके माता-पिता दूसरे व्यक्ति के पुत्र के साथ अपनी कन्या का विवाह करने का वचन देते हैं। दोनों पक्ष वाले कन्या तथा वर के बड़े हो जाने तक प्रतीक्षा करते हैं और तब विवाह सम्पन्न होता है। भारत में प्रचलित इसी पुरानी प्रथा का पालन करते हुए वृद्ध ब्राह्मण ने उस तरुण ब्राह्मण को अपनी कन्या देने का वचन दिया और उसने यह वचन गोपाल-विग्रह के समक्ष दिया। भारत में यह प्रथा है कि विग्रह के सामने दिये गये किसी भी वचन का पालन किया जाता है। ऐसे वचन को रद्द नहीं किया जा सकता। भारत के गाँवों में, जब भी दो पक्षों में कोई झगड़ा होता है, तो उसके निपटारे के लिए वे मन्दिर जाते हैं। विग्रह के समक्ष जो कुछ भी कहा जाता है, उसे सत्य माना जाता है, क्योंकि विग्रह के समक्ष किसी में झूठ बोलने का दुस्साहस नहीं होता। इसी

सिद्धान्त का पालन कुरुक्षेत्र युद्ध में किया गया। इसीलिए *भगवद्गीता* के प्रारम्भ में *धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे* कहा गया है।

भगवान् में श्रद्धा न होने के कारण ही मानव समाज पशु जीवन के निम्नतम स्तर पर गिरता जा रहा है। सामान्य जनता में भगवत् चेतना जाग्रत करने के लिए यह कृष्णभावनामृत आन्दोलन अत्यावश्यक है। यदि लोग वास्तव में कृष्णभावनाभावित हो जाएँ तो सारे झगड़े अदालत में गये बिना ही निपट जाएँ, जैसाकि इन दो ब्राह्मणों के साथ हुआ, जिनका मतभेद साक्षीगोपाल ने दूर किया।

ছোট-বিপ্র বলে,—"ঠাকুর, তুমি মোর সাক্ষী ।
তোমা সাক্ষী বোলাইমু, যদি অন্যথা দেখি" ॥৩৩॥

छोट-विप्र बले,—"ठाकुर, तुमि मोर साक्षी ।
तोमा साक्षी बोलाइमु, यदि अन्यथा देखि" ॥ ३३॥

छोट-विप्र बले—युवा ब्राह्मण ने उत्तर दिया; **ठाकुर**—मेरे प्रिय भगवान् गोपाल; **तुमि**—आप; **मोर**—मेरे; **साक्षी**—साक्षी; **तोमा**—आपको; **साक्षी**—साक्षी के रूप में; **बोलाइमु**—बुलाऊँगा; **यदि**—यदि; **अन्यथा**—इसके विपरीत; **देखि**—होता देखूँगा।

अनुवाद

तब तरुण ब्राह्मण ने विग्रह को सम्बोधित करते हुए कहा, "हे प्रभु, आप मेरे साक्षी हैं। यदि बाद में जरूरत पड़ी, तो मैं आपको साक्षी के रूप में बुलाऊँगा।"

এত বলি' দুই-জনে চলিলা দেশেরে ।
গুরু-বুদ্ধ্যে ছোট-বিপ্র বহু সেবা করে ॥৩৪॥

एत बलि' दुइ-जने चलिला देशेरे ।
गुरु-बुद्ध्ये छोट-विप्र बहु सेवा करे ॥ ३४॥

एत बलि'—यह कहकर; **दुइ-जने**—दोनों ब्राह्मण; **चलिला**—चले गये; **देशेरे**—अपने देश की ओर; **गुरु-बुद्ध्ये**—वृद्ध ब्राह्मण को गुरु मानकर; **छोट-विप्र**—युवा ब्राह्मण; **बहु**—बहुत; **सेवा**—सेवा; **करे**—करता है।

अनुवाद

इस वार्तालाप के बाद दोनों ब्राह्मण घर के लिए चल पड़े। पहले की ही तरह तरुण ब्राह्मण उस वृद्ध ब्राह्मण के साथ चला, मानो वृद्ध ब्राह्मण उसका गुरु हो और वह उसकी तरह-तरह से सेवा करता रहा।

देशे आसि' दुई-जने गेला निज-घरे ।
कत दिने वड़-विप्र चिन्तित अन्तरे ॥ ३५ ॥

देशे आसि' दुइ-जने गेला निज-घरे ।
कत दिने बड़-विप्र चिन्तित अन्तरे ॥ ३५ ॥

देशे आसि'—अपने देश में लौटने पर; **दुइ-जने**—वे दोनों; **गेला**—गये; **निज-घरे**—अपने अपने घर को; **कत दिने**—कुछ दिनों के बाद; **बड़-विप्र**—वृद्ध ब्राह्मण; **चिन्तित**—अत्यन्त चिन्तित; **अन्तरे**—भीतर से।

अनुवाद

विद्यानगर लौटकर दोनों ब्राह्मण अपने-अपने घर चले गये। कुछ समय बाद वृद्ध ब्राह्मण को चिन्ता सताने लगी।

तीर्थे विप्रे वाक्य दिलुँ,—केमते सत्य हय ।
स्त्री, पुत्र, ज्ञाति, बन्धु जानिबे निश्चय ॥ ३६ ॥

तीर्थे विप्रे वाक्य दिलुँ,—केमते सत्य हय ।
स्त्री, पुत्र, ज्ञाति, बन्धु जानिबे निश्चय ॥ ३६ ॥

तीर्थे—तीर्थ पर; **विप्रे**—ब्राह्मण को; **वाक्य**—प्रतिज्ञा; **दिलुँ**—की है; **केमते**—कैसे; **सत्य**—सत्य; **हय**—हो; **स्त्री**—पत्नी; **पुत्र**—पुत्र; **ज्ञाति**—सम्बन्धी; **बन्धु**—मित्र; **जानिबे**—जानेंगे; **निश्चय**—निश्चित रूप से।

अनुवाद

वह सोचने लगा, "मैंने तीर्थस्थान में एक ब्राह्मण को वचन दिया है और मेरे वचन का अवश्य पालन होना चाहिए। अब मुझे अपनी स्त्री, पुत्रों, अन्य सम्बन्धियों तथा मित्रों को यह बात बता देनी चाहिए।"

এক-দিন নিজ-লোক একত্র করিল ।
তা-সবার আগে সব বৃত্তান্ত কহিল ॥৩৭॥

एक-दिन निज-लोक एकत्र करिल ।
ता-सबार आगे सब वृत्तान्त कहिल ॥ ३७॥

एक-दिन—एक दिन; **निज-लोक**—अपने सभी सम्बन्धियों को; **एकत्र**—एक जगह; **करिल**—इकट्ठा करके; **ता-सबार**—उन सबके; **आगे**—समक्ष; **सब**—सब; **वृत्तान्त**—वृत्तान्त; **कहिल**—कहा।

अनुवाद

फलतः उस वृद्ध ब्राह्मण ने एक दिन अपने सारे सम्बन्धियों तथा मित्रों की सभा बुलाई और उसने उन सबको गोपाल के समक्ष हुई पूरी घटना बताई।

শুনি' সব গোষ্ঠী তার করে হাহা-কার ।
'ঐছে বাত্মুখে তুমি না আনিবে আর ॥৩৮॥

शुनि' सब गोष्ठी तार करे हाहा-कार ।
'ऐछे बात् मुखे तुमि ना आनिबे आर ॥ ३८॥

शुनि'—सुनकर; **सब**—सब; **गोष्ठी**—सम्बन्धी और मित्र; **तार**—वृद्ध ब्राह्मण को; **करे**—करते; **हाहा-कार**—निराशा से हाहाकार; **ऐछे**—ऐसा; **बात्**—प्रस्ताव; **मुखे**—मुख में; **तुमि**—तुम्हें; **ना**—नहीं; **आनिबे**—लाना चाहिए; **आर**—दोबारा, पुनः।

अनुवाद

जब परिवार वालों ने वृद्ध ब्राह्मण का वृत्तान्त सुना, तो वे निराशा प्रकट करते हुए हाहाकार करने लगे। उन सबने यही अनुरोध किया कि वह फिर ऐसा प्रस्ताव न रखे।

নীচে কন্যা দিলে কুল যাইবেক নাশ ।
শুনিঞা সকল লোক করিবে উপহাস' ॥৩৯॥

नीचे कन्या दिले कुल याइबेक नाश ।
शुनिञा सकल लोक करिबे उपहास' ॥ ३९॥

नीचे—निम्न कुल में; **कन्या**—कन्या; **दिले**—यदि देते हो; **कुल**—कुल की मर्यादा; **ग्राइबेक**—नष्ट हो जायेगी; **नाश**—नाश; **शुनिञा**—सुनकर; **सकल**—सभी; **लोक**—मित्र; **करिबे**—करेंगे; **उपहास**—उपहास।

अनुवाद

सबने एक स्वर से कहा, "यदि तुम अपनी कन्या निम्न परिवार में देते हो, तो तुम्हारी कुलीनता जाती रहेगी। जब लोग इसे सुनेंगे, तो वे तुम्हारा उपहास करेंगे।"

বিপ্র বলে,——''তীর্থ-বাক্য কেমনে করি আন ।
যে হউক্, সে হউক, আমি দিব কন্যা-দান'' ॥৪০॥

विप्र बले,——"तीर्थ-वाक्य केमने करि आन ।
ग्ये हउक्, से हउक, आमि दिब कन्या-दान" ॥४०॥

विप्र बले—ब्राह्मण बोलता है; **तीर्थ-वाक्य**—तीर्थस्थान पर दिया वचन; **केमने**—कैसे; **करि**—करुँ; **आन**—अन्यथा; **ग्ये हउक्**—जो भी हो; **से हउक**—होने दो; **आमि**—मैं; **दिब**—दूँगा; **कन्या-दान**—कन्या दान।

अनुवाद

वृद्ध ब्राह्मण ने कहा, "तीर्थयात्रा के समय पवित्र स्थान में दिया गया वचन मैं कैसे मिटा सकता हूँ? चाहे जो भी हो, मुझे उसे ही कन्यादान करना चाहिए।"

জ্ঞাতি লোক কহে,——'মোরা তোমাকে ছাড়িব' ।
স্ত্রী-পুত্র কহে,——'বিষ খাইয়া মরিব' ॥৪১॥

ज्ञाति लोक कहे,——'मोरा तोमाके छाड़िब' ।
स्त्री-पुत्र कहे,——'विष खाइया मरिब' ॥४१॥

ज्ञाति लोक—सम्बन्धी जन; **कहे**—कहा; **मोरा**—हम सब; **तोमाके**—तुम्हें; **छाड़िब**—त्याग देंगे; **स्त्री**—पत्नी; **पुत्र**—पुत्र; **कहे**—कहा; **विष**—विष; **खाइया**—पीकर; **मरिब**—हम मर जायेंगे।

अनुवाद

सम्बन्धियों ने एकजुट होकर कहा, "यदि तुम अपनी कन्या उस

लड़के को दोगे, तो हम तुमसे अपने सारे सम्बन्ध तोड़ देंगे।" उसकी स्त्री तथा पुत्रों ने घोषित किया, "यदि ऐसा होता है, तो हम सभी विष खाकर मर जायेंगे।"

विप्र वले,—"साक्षी बोलाञा करिबेक न्याय ।
जिति' कन्या लबे, मोर व्यर्थ धर्म हय" ॥४२॥

विप्र बले,—"साक्षी बोलाञा करिबेक न्याय ।
जिति' कन्या लबे, मोर व्यर्थ धर्म हय" ॥४२॥

विप्र बले—ब्राह्मण कहता है; **साक्षी**—एक साक्षी; **बोलाञा**—बुलाकर; **करिबेक**—होगा; **न्याय**—न्याय; **जिति'**—जीतकर; **कन्या**—कन्या; **लबे**—वह ले लेगा; **मोर**—मेरा; **व्यर्थ**—व्यर्थ; **धर्म**—धर्म; **हय**—होगा।

अनुवाद

वृद्ध ब्राह्मण ने कहा, "यदि मैं अपनी कन्या उस तरुण ब्राह्मण को नहीं देता, तो वह श्री गोपालजी को साक्षी के रूप में बुलायेगा। इस तरह वह मेरी कन्या को बलपूर्वक ले जायेगा और उस दशा में मेरा धर्म नष्ट हो जायेगा।"

पुत्र वले,—"प्रतिमा साक्षी, सेह दूर देशे ।
के तोमार साक्षी दिबे, चिन्ता कर किसे ॥४३॥

पुत्र बले,—"प्रतिमा साक्षी, सेह दूर देशे ।
के तोमार साक्षी दिबे, चिन्ता कर किसे ॥४३॥

पुत्र बले—उसका पुत्र कहता है; **प्रतिमा**—अर्चाविग्रह; **साक्षी**—साक्षी; **सेह**—वह भी; **दूर**—दूर; **देशे**—देश में; **के**—कौन; **तोमार**—तुम्हारी; **साक्षी**—साक्षी; **दिबे**—देगा; **चिन्ता**—चिन्ता; **कर**—तुम करते हो; **किसे**—क्यों।

अनुवाद

उसके पुत्र ने उत्तर दिया, "भले ही विग्रह साक्षी हों किन्तु वे दूर देश में हैं। भला वे आपके विरुद्ध साक्षी देने किस तरह आ सकते हैं? आप इसके विषय में इतने चिन्तित क्यों हैं?"

নাহি কহি—না কহিও এ মিথ্যা-বচন ।
সবে কহিবে—'মোর কিছু নাহিক স্মরণ' ॥ ৪৪ ॥

নাহি কহি—না কহিও এ মিথ্যা-বচন ।
সবে কহিবে—'মোর কিছু নাহিক স্মরণ' ॥ ৪৪ ॥

নাহি কহি—मैंने नहीं कहा; **না কহিও**—न कहो; **এ**—यह; **মিথ্যা-বচন**—झूठी बात; **সবে**—केवल; **কহিবে**—तुम कहना; **মোর**—मुझे; **কিছু**—कुछ; **নাহিক**—नहीं; **স্মরণ**—याद है।

अनुवाद

"आपको एकदम यह नहीं कहना है कि आपने ऐसी बात नहीं कही थी। ऐसी झूठी बात कहने की आवश्यकता नहीं है। आप केवल इतना ही कहिये कि आपको स्मरण नहीं है कि आपने क्या कहा था।

তুমি যদি কহ,—'আমি কিছুই না জানি' ।
তবে আমি ন্যায় করি' ব্রাহ্মণেরে জিনি'' ॥ ৪৫ ॥

তুমি যদি কহ,—'আমি কিছুই না জানি' ।
তবে আমি ন্যায় করি' ব্রাহ্মণেরে জিনি" ॥ ৪৫ ॥

তুমি—आप; **যদি**—यदि; **কহ**—कहते हैं; **আমি কিছুই না জানি**—मुझे कुछ नहीं याद है; **তবে**—तब; **আমি**—मैं; **ন্যায় করি'**—तर्क करके; **ব্রাহ্মণেরে**—युवा ब्राह्मण; **জিনি**—जीत जाऊँगा।

अनुवाद

"यदि आप केवल इतना ही कहें, 'मुझे स्मरण नहीं है,' तो बाकी मैं निपट लूँगा। मैं तर्क द्वारा उस तरुण ब्राह्मण को हरा दूँगा।"

तात्पर्य

वृद्ध ब्राह्मण का पुत्र नास्तिक था और रघुनाथ-स्मृति का अनुयायी था। वह रुपये-पैसे के मामले में दक्ष था, किन्तु था पहले दर्जे का मूर्ख। फलतः वह विग्रह की दिव्यता पर विश्वास नहीं करता था, न ही पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् में उसे कोई श्रद्धा थी। फलतः एक निपट मूर्तिपूजक की तरह वह भगवान् के रूप को पत्थर या लकड़ी का बना हुआ समझ रहा था। इस तरह उसने अपने पिता को आश्वस्त किया कि साक्षी मात्र पत्थर का विग्रह था, जो बोलने में

असमर्थ था। इसके अतिरिक्त उसने अपने पिता को यह भी विश्वास दिलाया कि विग्रह दूर देश में है, फलतः वह साक्षी देने नहीं आ सकता। संक्षेप में वह कह रहा था, "चिन्ता न करें। आपको सफेद झूठ नहीं बोलना है, अपितु कूटनीतिज्ञ की भाँति कहना है, जैसाकि युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य से कहा था—*अश्वत्थामा हत इति गजः।* इस सिद्धान्त का पालन करते हुए आप केवल इतना ही कहें कि मुझे कुछ भी स्मरण नहीं है और यह तरुण ब्राह्मण जो कुछ कह रहा है, मैं इससे पूर्णतः अनजान हूँ। यदि आप इस प्रकार बोलें तो फिर मैं जानता हूँ कि किस तरह तर्क करके शब्दाडम्बर से उसे हराया जाये। इस तरह आप उसे कन्यादान करने से बच सकेंगे और हमारी कुलीनता बनी रहेगी। आपको चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

এত শুনি' বিপ্রের চিত্তিত হৈল মন ।
একান্ত-ভাবে চিন্তে বিপ্র গোপাল-চরণ ॥ ৪৬॥
एत शुनि' विप्रेर चिन्तित हैल मन ।
एकान्त-भावे चिन्ते विप्र गोपाल-चरण ॥ ४६ ॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **विप्रेर**—वृद्ध ब्राह्मण; **चिन्तित**—चिन्तित; **हैल**—हो गया; **मन**—मन; **एकान्त-भावे**—एकान्त भाव में; **चिन्ते**—सोचता है; **विप्र**—ब्राह्मण; **गोपाल-चरण**—श्री गोपालजी के चरणकमल के।

अनुवाद

जब वृद्ध ब्राह्मण ने यह सुना, तो उसका मन क्षुब्ध हो उठा। असहाय अवस्था में उसने अपना ध्यान गोपाल के चरणकमलों पर एकाग्र किया।

'মোর ধর্ম রক্ষা পায়, না মরে নিজ-জন ।
দুই রক্ষা কর, গোপাল, লৈনু শরণ' ॥ ৪৭॥
'मोर धर्म रक्षा पाय, ना मरे निज-जन ।
दुइ रक्षा कर, गोपाल, लैनु शरण' ॥ ४७॥

मोर—मेरा; **धर्म**—धर्म; **रक्षा पाय**—रहे; **ना**—नहीं; **मरे**—मरें; **निज-जन**—मेरे अपने सम्बन्धी; **दुइ**—दोनों; **रक्षा कर**—कृपया रक्षा करो; **गोपाल**—मेरे भगवान् गोपाल; **लैनु**—मैंने ले ली है; **शरण**—आपके चरणकमलों की शरण।

अनुवाद

वृद्ध ब्राह्मण ने विनती की, "हे प्रभु गोपाल! मैंने आप के चरणकमलों की शरण ली है, अतएव मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि मेरे धर्म की रक्षा करें और साथ ही मेरे आत्मीय जनों को मरने से बचायें।"

এই-মত বিপ্র চিত্তে চিন্তিতে লাগিল ।
আর দিন লঘু-বিপ্র তাঁর ঘরে আইল ॥৪৮॥

এइ-মত বিপ্র চিত্তে চিন্তিতে লাগিল ।
আর দিন লঘু-বিপ্র তাঁর ঘরে আইল ॥ ৪৮ ॥

এइ-মত—इस प्रकार; **বিপ্র**—वृद्ध ब्राह्मण; **চিত্তে**—मन में; **চিন্তিতে**—चिन्ता करने; **লাগিল**—लगा; **আর দিন**—अगले दिन; **লঘু-বিপ্র**—युवा ब्राह्मण; **তাঁর**—उसके; **ঘরে**—घर; **আইল**—आ गया।

अनुवाद

अगले दिन जब वह ब्राह्मण इस बारे में गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा था, तभी वह तरुण ब्राह्मण उसके घर आया।

আসিঞা পরম-ভক্ত্যে নমস্কার করি' ।
বিনয় করিঞা কহে কর দুই যুড়ি' ॥৪৯॥

আসিঞা পরম-ভক্ত্যে নমস্কার করি' ।
বিনয় করিঞা কহে কর দুই যুড়ি' ॥ ৪৯ ॥

আসিঞা—आकर; **পরম-ভক্ত্যে**—अत्यन्त समर्पणपूर्वक; **নমস্কার করি'**—नमस्कार करके; **বিনয় করিঞা**—विनयपूर्वक; **কহে**—कहता है; **কর**—हाथ; **দুই**—दोनों; **যুড়ি'**—जोड़कर।

अनुवाद

तरुण ब्राह्मण ने उसके पास आकर सादर प्रणाम किया। फिर अत्यन्त विनीत भाव से हाथ जोड़कर वह इस प्रकार बोला।

'তুমি মোরে কন্যা দিতে কর্যাছ অঙ্গীকার ।
এবে কিছু নাহি কহ, কি তোমার বিচার' ॥৫০॥

'तुमि मोरे कन्या दिते कर्य्याछ अङ्गीकार ।
एबे किछु नाहि कह, कि तोमार विचार' ॥५०॥

तुमि—आपने; **मोरे**—मुझे; **कन्या**—अपनी पुत्री; **दिते**—दान देने के लिए; **कर्य्याछ**—की है; **अङ्गीकार**—प्रतिज्ञा; **एबे**—अब; **किछु**—कुछ; **नाहि**—नहीं; **कह**—आप कहते हो; **कि**—क्या; **तोमार**—आपका; **विचार**—निर्णय।

अनुवाद

"आपने मुझे अपनी कन्या दान करने का वचन दिया है। किन्तु अब आप कुछ नहीं बोल रहे हैं। आपने क्या निर्णय लिया है?"

एत शुनि' सेइ विप्र रहे मौन धरि' ।
ताँर पुत्र मारिते आइल हाते ठेङ्गा करि' ॥५१॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **सेइ विप्र**—वृद्ध ब्राह्मण; **रहे**—रहता है; **मौन धरि'**—चुप रहता है; **ताँर**—उसका; **पुत्र**—पुत्र; **मारिते**—मारने के लिए; **आइल**—बाहर आ गया; **हाते**—हाथ में; **ठेङ्गा**—डंडा; **करि'**—लेकर।

अनुवाद

तरुण ब्राह्मण द्वारा ऐसा कहे जाने पर वृद्ध ब्राह्मण मौन रहा। इस अवसर का लाभ उठाकर वृद्ध ब्राह्मण का पुत्र उस तरुण ब्राह्मण को मारने के लिए लाठी लेकर तुरन्त बाहर निकल आया।

'आरे अधम! मोर भग्नी चाह बिवाहिते ।
बामन हञा चाँद येन चाह त' धरिते' ॥५२॥

आरे अधम—अरे नीच; **मोर**—मेरी; **भग्नी**—बहन से; **चाह**—तुम चाहते हो; **विवाहिते**—विवाह करना; **वामन**—बौना; **हञा**—होकर; **चाँद**—चाँद; **येन**—जैसे; **चाह**—तुम चाहते हो; **त'**—निश्चित रूप से; **धरिते**—पकड़ना।

अनुवाद

पुत्र ने कहा, "अरे नीच! तू मेरी बहन के साथ इस प्रकार विवाह करना चाहता है, जैसे कोई बौना व्यक्ति चाँद को पकड़ना चाहता हो!"

ঠেঞা দেখি' সেই বিপ্র পলাঞা গেল ।
আর দিন গ্রামের লোক একত্র করিল ॥৫৩॥

ঠেঞা দেখি' সেই বিপ্র পলাঞা গেল ।
আর দিন গ্রামের লোক একত্র করিল ॥৫৩॥

ठेञा देखि'—हाथ में छड़ी देखकर; **सेइ विप्र**—युवा ब्राह्मण; **पलाञा गेल**—भाग गया; **आर दिन**—अगले दिन; **ग्रामेर लोक**—गाँव के निवासी; **एकत्र करिल**—इकट्ठे कर लाया।

अनुवाद

उसके हाथ में लाठी देखकर बेचारा तरुण ब्राह्मण भाग गया। किन्तु अगले दिन उसने गाँव के सारे लोगों को एकत्र किया।

সব লোক বড়-বিপ্রে ডাকিয়া আনিল ।
তবে সেই লঘু-বিপ্র কহিতে লাগিল ॥৫৪॥

সব লোক বড়-বিপ্রে ডাকিয়া আনিল ।
তবে সেই লঘু-বিপ্র কহিতে লাগিল ॥৫৪॥

सब लोक—गाँव के सभी निवासी; **बड़-विप्रे**—वृद्ध ब्राह्मण; **डाकिया**—बुलाकर; **आनिल**—लाये; **तबे**—तब; **सेइ लघु-विप्र**—वह युवा ब्राह्मण; **कहिते लागिल**—कहने लगा।

अनुवाद

तब गाँव के सभी लोगों ने वृद्ध ब्राह्मण को सभा-स्थल पर बुलाया। तत्पश्चात् तरुण ब्राह्मण ने उनके समक्ष कहना शुरू किया।

'ইঁহ মোরে কন্যা দিতে কর্যাছে অঙ্গীকার ।
এবে যে না দেন, পুছ ইঁহার ব্যবহার' ॥৫৫॥

'इँह मोरे कन्या दिते कर्य्याछे अङ्गीकार ।
एबे ग्रे ना देन, पुछ इँहार व्यवहार' ॥ ५५ ॥

इँह—इस भद्र पुरुष ने; **मोरे**—मुझे; **कन्या**—अपनी पुत्री; **दिते**—दान करने के लिए; **कर्य्याछे**—दिया है; **अङ्गीकार**—वचन; **एबे**—अब; **ग्रे**—वास्तव में; **ना**—नहीं; **देन**—देता है; **पुछ**—कृपया पूछिए; **इँहार**—इसका; **व्यवहार**—व्यवहार।

अनुवाद

"इन महाशय ने अपनी कन्या मुझे देने का वचन दिया था, किन्तु अब ये अपना वचन नहीं निभा रहे हैं। कृपया इनसे इनके इस व्यवहार के विषय में पूछें।"

তবে সেই বিপ্রেরে পুছিল সর্ব-জন ।
'কন্যা কেনে না দেহ, যদি দিয়াছ বচন' ॥ ৫৬ ॥

तबे सेइ विप्रेरे पुछिल सर्व-जन ।
'कन्या केने ना देह, ग्रदि दियाछ वचन' ॥ ५६ ॥

तबे—तब; **सेइ**—उस; **विप्रेरे**—ब्राह्मण ने; **पुछिल**—पूछा; **सर्व-जन**—सब लोगों से; **कन्या**—कन्या; **केने**—क्यों; **ना देह**—तुम दान नहीं देते हो; **ग्रदि**—यदि; **दियाछ**—दिया है; **वचन**—वचन।

अनुवाद

वहाँ पर एकत्रित सभी लोगों ने वृद्ध ब्राह्मण से पूछा, "यदि पहले आप कन्यादान का वचन दे चुके हैं तो अपना वादा पूरा क्यों नहीं कर रहे हैं? आपने वचन दे रखा है।"

বিপ্র কহে,—'শুন, লোক, মোর নিবেদন ।
কবে কি বলিয়াছি, মোর নাহিক স্মরণ' ॥ ৫৭ ॥

विप्र कहे,—'शुन, लोक, मोर निवेदन ।
कबे कि बलियाछि, मोर नाहिक स्मरण' ॥ ५७ ॥

विप्र कहे—वृद्ध ब्राह्मण ने उत्तर दिया; **शुन**—कृपया सुनो; **लोक**—सभी लोग; **मोर**—मेरा; **निवेदन**—निवेदन; **कबे**—कब; **कि**—क्या; **बलियाछि**—मैंने कहा है; **मोर**—मेरा; **नाहिक**—नहीं है; **स्मरण**—स्मरण।

अनुवाद

वृद्ध ब्राह्मण ने कहा, "हे मित्रों, कृपया मेरा निवेदन सुनें। मुझे ठीक से स्मरण नहीं है कि मैंने ऐसा कोई वचन दिया था।"

এত শুনি' তাঁর পুত্র বাক্য-ছল পাঞা ।
প্রগল্ভ হইয়া কহে সম্মুখে আসিঞা ॥৫৮॥

एत शुनि' ताँर पुत्र वाक्य-च्छल पाञा ।
प्रगल्भ हइया कहे सम्मुखे आसिञा ॥५८॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **ताँर पुत्र**—उसका पुत्र; **वाक्य-च्छल**—शब्द जाल; **पाञा**—अवसर पाकर; **प्रगल्भ**—धृष्टतापूर्वक; **हइया**—होकर; **कहे**—कहता है; **सम्मुखे**—सामने; **आसिञा**—आकर।

अनुवाद

जब वृद्ध ब्राह्मण के पुत्र ने यह सुना, तो उसे शब्दों को तोड़ने-मरोड़ने का अवसर मिल गया। वह सभा के समक्ष अत्यन्त धृष्टतापूर्वक खड़ा हो गया और इस प्रकार बोला।

'তীর্থ-যাত্রায় পিতার সঙ্গে ছিল বহু ধন ।
ধন দেখি এই দুষ্টের লৈতে হৈল মন ॥৫৯॥

'तीर्थ-यात्राय पितार सङ्गे छिल बहु धन ।
धन देखि एइ दुष्टेर लैते हैल मन ॥५९॥

तीर्थ-यात्राय—जब तीर्थ स्थानों पर जा रहे थे; **पितार**—मेरा पिता; **सङ्गे**—के साथ; **छिल**—था; **बहु**—बहुत; **धन**—धन; **धन**—धन; **देखि**—देखकर; **एइ**—यह; **दुष्टेर**—दुष्ट; **लैते**—लेना; **हैल**—था; **मन**—इरादा।

अनुवाद

"जगह-जगह की तीर्थयात्रा करते समय मेरे पिता अपने साथ प्रचुर धन ले गये थे। इस धूर्त ने उस धन को ले लेने की ठान ली।"

আর কেহ সঙ্গে নাহি, এই সঙ্গে একল ।
ধুতুরা খাওয়াঞা বাপে করিল পাগল ॥৬০॥

आर केह सङ्गे नाहि, एइ सङ्गे एकल ।
धुतुरा खाओयाजा बापे करिल पागल ॥ ६० ॥

आर—और कोई; **केह**—अन्य; **सङ्गे**—के साथ; **नाहि**—नहीं था; **एइ**—यह ब्राह्मण; **सङ्गे**—के साथ; **एकल**—अकेला; **धुतुरा**—एक नशा; **खाओयाजा**—खिलाकर; **बापे**—मेरे पिता को; **करिल**—किया; **पागल**—पागल।

अनुवाद

"मेरे पिता के साथ इसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था। इस धूर्त ने मेरे पिता को धतूरा खिलाकर पागल बना दिया।

सब धन लञा कहे—'चोरे लइल धन' ।
'कन्या दिते चाहियाछे'—उठाइल वचन ॥ ६१ ॥

सब धन लजा कहे—'चोरे लइल धन' ।
'कन्या दिते चाहियाछे'—उठाइल वचन ॥ ६१ ॥

सब—सब; **धन**—धन; **लञा**—लेकर; **कहे**—कहता है; **चोरे**—एक चोर ने; **लइल**—लिया; **धन**—सारा धन; **कन्या**—कन्या; **दिते**—दान देने के लिए; **चाहियाछे**—वचन दिया है; **उठाइल**—उठाया है; **वचन**—वचन।

अनुवाद

"इस धूर्त ने मेरे पिता का सारा धन लेकर यह कह दिया कि उसे कोई चोर ले गया। अब वह यह दावा कर रहा है कि मेरे पिता ने उसे अपनी कन्या दान करने का वचन दिया है।

तोमरा सकल लोक करह विचारे ।
'मोर पितार कन्या दिते योग्य कि इहारे' ॥ ६२ ॥

तोमरा सकल लोक करह विचारे ।
'मोर पितार कन्या दिते योग्य कि इहारे' ॥ ६२ ॥

तोमरा—आप; **सकल**—सब; **लोक**—लोग; **करह**—करो; **विचारे**—विचार; **मोर**—मेरे; **पितार**—पिता की; **कन्या**—पुत्री; **दिते**—दान देना; **योग्य**—योग्य; **कि**—क्या है; **इहारे**—उसको।

अनुवाद

"यहाँ पर एकत्र आप सभी लोग सज्जन हैं। कृपया यह विचार करें क्या इस दरिद्र ब्राह्मण को मेरे पिता का कन्यादान उचित होगा?"

এত শুনি' লোকের মনে হইল সংশয় ।
'সম্ভবে,——ধন-লোভে লোক ছাড়ে ধর্ম-ভয়' ॥৬৩॥

এত শুনি' লোকের মনে হইল সংশয় ।
'সম্ভবে,——ধন-লোভে লোক ছাড়ে ধর্ম-ভয়' ॥৬৩॥

এত শুনি'—यह सब सुनकर; **লোকের**—सभी लोगों के; **মনে**—मन में; **হইল**—हो गया; **সংশয়**—संशय; **সম্ভবে**—सम्भव; **ধন-লোভে**—धन के लोभ से; **লোক**—कोई पुरुष; **ছাড়ে**—छोड़ देता है; **ধর্ম-ভয়**—धर्म का भय।

अनुवाद

ये सब तर्क सुनकर वहाँ पर एकत्र सारे लोग कुछ कुछ शंकित हो गये। उन्होंने सोचा कि यह सम्भव है कि धन के लोभ से कोई अपना धर्म छोड़ दे।

তবে ছোট-বিপ্র কহে, "শুন, মহাজন ।
ন্যায় জিনিবারে কহে অসত্য-বচন ॥৬৪॥

তবে ছোট-বিপ্র কহে, "শুন, মহাজন ।
ন্যায় জিনিবারে কহে অসত্য-বচন ॥৬৪॥

তবে—उस समय; **ছোট-বিপ্র**—युवा ब्राह्मण; **কহে**—कहता है; **শুন**—कृपया सुनो; **মহা-জন**—सभी भद्र पुरुषों; **ন্যায়**—तर्क में; **জিনিবারে**—जीतने के लिए; **কহে**—वह कहता है; **অসত্য-বচন**—असत्य वचन।

अनुवाद

उस समय तरुण ब्राह्मण ने कहा, "हे सज्जनों, कृपया मेरी बात सुनें। तर्क में जीतने के लिए ही यह व्यक्ति झूठ बोल रहा है।

এই বিপ্র মোর সেবায় তুষ্ট যবে হৈলা ।
'তোরে আমি কন্যা দিব' আপনে কহিলা ॥৬৫॥

एइ विप्र मोर सेवाय तुष्ट ग्रबे हैला ।
'तोरे आमि कन्या दिब' आपने कहिला ॥ ६५ ॥

एइ विप्र—यह ब्राह्मण; **मोर**—मेरी; **सेवाय**—सेवा से; **तुष्ट**—पूर्णतया तुष्ट; **ग्रबे**—जब; **हैला**—हो गया; **तोरे**—तुम्हें; **आमि**—मैं; **कन्या**—पुत्री; **दिब**—दूँगा; **आपने**—अपनी इच्छा से; **कहिला**—कहा, प्रण किया।

अनुवाद

"मेरी सेवा से अत्यधिक सन्तुष्ट होकर इस ब्राह्मण ने स्वेच्छा से मुझसे कहा कि, 'मैं तुम्हें अपनी कन्या दान करने का वचन देता हूँ।'

তবে মুঞি নিষেধিনু,—শুন, দ্বিজ-বর ।
তোমার কন্যার যোগ্য নহি মুঞি বর ॥ ৬৬ ॥

तबे मुञि निषेधिनु,—शुन, द्विज-वर ।
तोमार कन्यार ग्रोग्य नहि मुञि वर ॥ ६६ ॥

तबे—उस समय; **मुञि**—मैंने; **निषेधिनु**—मना किया; **शुन**—सुनो; **द्विज-वर**—हे श्रेष्ठ ब्राह्मण; **तोमार**—तुम्हारी; **कन्यार**—पुत्री के लिए; **ग्रोग्य**—योग्य; **नहि**—नहीं; **मुञि**—मैं; **वर**—वर।

अनुवाद

"उस समय मैंने इनसे यह कहते हुए ऐसा करने से मना किया, "हे ब्राह्मण-श्रेष्ठ, मैं आपकी पुत्री के लिए योग्य वर नहीं हूँ।

কাহাঁ তুমি পণ্ডিত, ধনী, পরম কুলীন ।
কাহাঁ মুঞি দরিদ্র, মূর্খ, নীচ, কুল-হীন ॥ ৬৭ ॥

काहाँ तुमि पण्डित, धनी, परम कुलीन ।
काहाँ मुञि दरिद्र, मूर्ख, नीच, कुल-हीन ॥ ६७ ॥

काहाँ—कहाँ; **तुमि**—तुम; **पण्डित**—विद्वान पण्डित; **धनी**—धनवान; **परम**—प्रथम श्रेणी का; **कुलीन**—कुलीन; **काहाँ**—कहाँ; **मुञि**—मैं; **दरिद्र**—निर्धन; **मूर्ख**—अनपढ़; **नीच**—नीच, पतित; **कुल-हीन**—कुलीनताहीन।

अनुवाद

"'कहाँ आप पंडित, धनी और उच्च कुली के व्यक्ति! कहाँ मैं एक गरीब, अशिक्षित तथा कुलहीन व्यक्ति।'

তবু এই বিপ্র মোরে কহে বার বার ।
তোরে কন্যা দিলুঁ, তুমি করহ স্বীকার ॥৬৮॥

তবু এই বিপ্র মোরে কহে বার বার ।
তোরে কন্যা দিলুঁ, তুমি করহ স্বীকার ॥ ৬৮ ॥

তবু—फिर भी; **এই**—यह; **বিপ্র**—ब्राह्मण; **মোরে**—मुझे; **কহে**—कहता है; **বার বার**—बार बार; **তোরে**—तुम्हें; **কন্যা**—अपनी पुत्री; **দিলুঁ**—मैंने दान में दी है; **তুমি**—तुम; **করহ**—करो; **স্বীকার**—स्वीकार।

अनुवाद

"फिर भी इस ब्राह्मण ने हठ किया। इन्होंने बारम्बार मुझसे यह कहते हुए प्रस्ताव स्वीकार करने को कहा, 'मैंने तुम्हें अपनी कन्या दे दी। तुम उसे स्वीकार करो।'

তবে আমি কহিলাঁ—শুন, মহা-মতি ।
তোমার স্ত্রী-পুত্র-জ্ঞাতির না হবে সম্মতি ॥৬৯॥

তবে আমি কহিলাঁ—শুন, মহা-মতি ।
তোমার স্ত্রী-পুত্র-জ্ঞাতির না হবে সম্মতি ॥ ৬৯ ॥

তবে—उस समय; **আমি**—मैंने; **কহিলাঁ**—कहा; **শুন**—कृपया सुनो; **মহা-মতি**—हे बुद्धिमान ब्राह्मण; **তোমার**—आपके; **স্ত্রী-পুত্র**—पत्नी तथा पुत्र; **জ্ঞাতির**—सम्बन्धी; **না হবে সম্মতি**—सहमत नहीं होंगे।

अनुवाद

"तब मैंने कहा, 'कृपया मेरी बात सुनिये। आप विद्वान ब्राह्मण हैं। आपकी पत्नी, आपके मित्र तथा सम्बन्धी इस प्रस्ताव से कभी भी सहमत नहीं होंगे।

কন্যা দিতে নারিবে, হবে অসত্য-বচন ।
পুনরপি কহে বিপ্র করিয়া যতন ॥৭০॥

কন্যা দিতে নারিবে, হবে অসত্য-বচন ।
পুনরপি কহে বিপ্র করিয়া যতন ॥ ৭০ ॥

कन्या—पुत्री; **दिते**—देने में; **नारिबे**—सक्षम नहीं; **हबे**—होंगे; **असत्य-वचन**—झूठी बात; **पुनरपि**—फिर; **कहे**—वह कहता है; **विप्र**—ब्राह्मण; **करिया यतन**—जोर देकर।

अनुवाद

"'मान्यवर, आप अपना वचन निभा नहीं पायेंगे। अतः आपका वचन भंग होगा।' फिर भी ये ब्राह्मण अपने वचन पर बारम्बार बल देते रहे।

कन्या तोरे दिलुँ, द्विधा ना करिह चिते ।
आत्म-कन्या दिब, केबा पारे निषेधिते ॥७१॥

कन्या तोरे दिलुँ, द्विधा ना करिह चिते ।
आत्म-कन्या दिब, केबा पारे निषेधिते ॥७१॥

कन्या—पुत्री; **तोरे**—तुम्हें; **दिलुँ**—मैंने दी है; **द्विधा**—संशय; **ना**—न; **करिह**—करो; **चिते**—अपने मन में; **आत्म-कन्या**—मेरी अपनी पुत्री; **दिब**—मैं तुम्हें दूंगा; **केबा**—कौन; **पारे**—कर सकता है; **निषेधिते**—मना।

अनुवाद

"'मैंने तुम्हें कन्यादान दिया है। संकोच मत करो। वह मेरी पुत्री है और मैं उसे तुम्हें दूँगा। भला मुझे कौन मना कर सकता है?'

तबे आमि कहिलाँ दृढ़ करि' मन ।
गोपालेर आगे कह ए-सत्य बचन ॥७२॥

तबे आमि कहिलाँ दृढ़ करि' मन ।
गोपालेर आगे कह ए-सत्य वचन ॥७२॥

तबे—उस समय; **आमि**—मैंने; **कहिलाँ**—कहा; **दृढ़ करि' मन**—मन को दृढ़ करके; **गोपालेर आगे**—गोपाल अर्चाविग्रह के समक्ष; **कह**—कहो; **ए-सत्य वचन**—यह सच्ची बात।

अनुवाद

"उस समय मैंने अपना मन दृढ़ किया और ब्राह्मण से विनती की कि वे गोपाल-विग्रह के समक्ष वचन दें।

তবে ইঁহো গোপালের আগেতে কহিল ।
তুমি জান, এই বিপ্রে কন্যা আমি দিল ॥৭৩॥

তবে ইঁহো গোপালের আগেতে কহিল ।
তুমি জান, এই বিপ্রে কন্যা আমি দিল ॥ ৭৩ ॥

তবে—তব; **ইঁহো**—यह महाशय; **গোপালের**—गोपाल अर्चाविग्रह के; **আগেতে**—सामने; **কহিল**—कहा; **তুমি জান**—मेरे प्रभु, कृपया जान लो; **এই বিপ্রে**—इस युवा ब्राह्मण को; **কন্যা**—अपनी पुत्री; **আমি**—मैंने; **দিল**—दी है।

अनुवाद

"तब इस महाशय ने गोपाल-विग्रह के समक्ष कहा, 'हे प्रभु, आप साक्षी हैं। मैंने अपनी कन्या इस ब्राह्मण को दान दे दी है।'

তবে আমি গোপালেরে সাক্ষী করিঞা ।
কহিলাঁ তাঁর পদে মিনতি করিঞা ॥৭৪॥

তবে আমি গোপালেরে সাক্ষী করিঞা ।
কহিলাঁ তাঁর পদে মিনতি করিঞা ॥ ৭৪ ॥

তবে—तब; **আমি**—मैंने; **গোপালেরে**—गोपाल के विग्रह को; **সাক্ষী**—साक्षी; **করিঞা**—करके; **কহিলাঁ**—कहा; **তাঁর পদে**—उनके चरणकमलों पर; **মিনতি**—विनय; **করিঞা**—करके।

अनुवाद

"तब मैंने गोपाल-विग्रह को अपना साक्षी बनाकर उनके चरणकमलों में इस प्रकार निवेदन किया।

যদি এই বিপ্র মোরে না দিবে কন্যা-দান ।
সাক্ষী বোলাইমু তোমায়, হইও সাবধান ॥৭৫॥

যদি এই বিপ্র মোরে না দিবে কন্যা-দান ।
সাক্ষী বোলাইমু তোমায়, হইও সাবধান ॥ ৭৫ ॥

যদি—यदि; **এই**—यह; **বিপ্র**—ब्राह्मण; **মোরে**—मुझे; **না**—नहीं; **দিবে**—देगा; **কন্যা-দান**—कन्यादान; **সাক্ষী বোলাইমু**—मैं साक्षी के रूप में बुलाऊँगा; **তোমায়**—आपको; **হইও সাবধান**—कृपया सावधान हो जाइये।

अनुवाद

"'यदि बाद में ये ब्राह्मण अपनी कन्या मुझे देने में संकोच करेंगे, तो मैं आपको साक्षी के रूप में बुलाऊँगा। कृपया इसे सावधान होकर सुनें।'

এই বাক্যে সাক্ষী মোর আছে মহাজন ।
যাঁর বাক্য সত্য করি মানে ত্রিভুবন'' ॥৭৬॥

এइ वाक्ये साक्षी मोर आछे महाजन ।
याँर वाक्य सत्य करि माने त्रिभुवन" ॥ ७६ ॥

एइ वाक्ये—इस कथन में; **साक्षी**—साक्षी; **मोर**—मेरे; **आछे**—हैं; **महाजन**—एक महान् व्यक्ति; **याँर**—जिनके; **वाक्य**—शब्द; **सत्य**—सत्य; **करि**—मान करके; **माने**—स्वीकार करता है; **त्रि-भुवन**—तीनों भुवन।

अनुवाद

"इस तरह इस घटना में मैंने एक महापुरुष का आवाहन किया है। मैंने पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् को मेरा साक्षी बनने को कहा है। भगवान् के वचनों को तीनों लोक सत्य मानते हैं।"

तात्पर्य

यद्यपि युवा ब्राह्मण ने अपने आपको कुलनताहीन तथा अशिक्षित साधारण व्यक्ति बतलाया, किन्तु फिर भी उसमें एक अच्छा गुण था—वह यह कि वह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् को सर्वोच्च अधिकारी समझता था, वह भगवान् कृष्ण के शब्दों को बिना संकोच के स्वीकार करता था और उसे भगवान् पर दृढ़ विश्वास था। महाभागवत प्रह्लाद महाराज के अनुसार ऐसे दृढ़ तथा श्रद्धालु भगवद्भक्त को परम विद्वान मानना चाहिए—*तन्मन्येऽधीतमुत्तमम्* (*श्रीमद्-भागवत* ७.५.२४)। जिस शुद्ध भक्त को पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के शब्दों में दृढ़ आस्था है, उसे ही संसार का सबसे बड़ा विद्वान, सर्वोच्च कुलीन तथा सर्वाधिक धनी मानना चाहिए। ऐसे भक्त में सारे सद्-गुण स्वतः पाये जाते हैं। हम लोग कृष्णभावनामृत आन्दोलन के प्रचार कार्य में भगवान् के दासानुदास के रूप में भगवान् कृष्ण तथा उनकी परम्परा के शब्दों में पूर्ण विश्वास रखते हैं। इस तरह हम कृष्ण के निर्देशों का सारे विश्व में प्रचार करते हैं। यद्यपि हम

न तो धनी हैं, न ही अधिक विद्वान और न कुलीन हैं, फिर भी इस आन्दोलन का स्वागत हो रहा है और यह सारे विश्व में बड़ी ही सुगमतापूर्वक प्रचार हो रहा है। यद्यपि हम अत्यन्त निर्धन हैं और हमारे पास आय का कोई व्यवसायिक साधन नहीं है, फिर भी जब भी हमें धन की आवश्यकता होती है, कृष्ण प्रदान करते हैं। जब हमें व्यक्तियों की आवश्यकता होती है, तो कृष्ण प्रदान करते हैं। इसीलिए *भगवद्गीता* (६.२२) में कहा गया है—*यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।* वास्तव में यदि हमें भगवान् कृष्ण की कृपा प्राप्त हो जाये, तो फिर हमें और कुछ भी नहीं चाहिए। हमें निश्चय ही उन वस्तुओं की आवश्यकता नहीं रह जाती, जिन्हें संसारी व्यक्ति भौतिक सम्पत्ति मानते हैं।

तबे बड़-विप्र कहे, "एइ सत्य कथा ।
गोपाल यदि साक्षी देन, आपने आसि' एथा ॥७७॥
तबे कन्या दिब आमि, जानिह निश्चय" ।
ताँर पुत्र कहे,—'एइ भाल बात हय' ॥७८॥

तबे बड़-विप्र कहे, "एइ सत्य कथा ।
गोपाल यदि साक्षी देन, आपने आसि' एथा ॥७७॥
तबे कन्या दिब आमि, जानिह निश्चय" ।
ताँर पुत्र कहे,—'एइ भाल बात हय' ॥७८॥

तबे—उस समय; **बड़-विप्र**—वृद्ध ब्राह्मण; **कहे**—कहता है; **एइ सत्य कथा**—यह सत्य है; **गोपाल**—गोपाल अर्चाविग्रह; **यदि**—यदि; **साक्षी**—साक्षी; **देन**—देती है; **आपने**—स्वयं; **आसि'**—आकर; **एथा**—यहाँ; **तबे**—तब; **कन्या**—पुत्री; **दिब**—दान में अवश्य दूँगा; **आमि**—मैं; **जानिह**—आप सब जान लें; **निश्चय**—निश्चित रूप से; **ताँर**—उसका; **पुत्र**—पुत्र; **कहे**—कहता है; **एइ**—यह; **भाल**—अच्छी; **बात**—बात; **हय**—है।

अनुवाद

इस अवसर का लाभ उठाते हुए वृद्ध ब्राह्मण ने तुरन्त पुष्टि की कि यह वास्तव में सच है। उसने कहा, "यदि स्वयं गोपाल साक्षी के रूप में यहाँ तक चलकर आयें, तो मैं इस तरुण ब्राह्मण को अपनी कन्या दान दे दूँगा।" उस वृद्ध ब्राह्मण के पुत्र ने तुरन्त ही यह कहकर पुष्टि की, "हाँ, यह बहुत ही उत्तम प्रस्ताव है।"

तात्पर्य

सारे जीवों के हृदय में परमात्मा रूप में स्थित भगवान् कृष्ण जन-जन की इच्छा, याचना तथा प्रार्थना को जानने वाले हैं। भले ही ये सारी बातें परस्पर विरोधी लगें, किन्तु भगवान् ऐसी स्थिति बनाते हैं कि जिसमें हर कोई प्रसन्न रहे। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है वृद्ध ब्राह्मण तथा तरुण ब्राह्मण के बीच हुआ विवाह का समझौता। निस्सन्देह वृद्ध ब्राह्मण उस तरुण ब्राह्मण को अपनी कन्या देना चाहता था, किन्तु उसका पुत्र तथा उसके सम्बन्धी इसमें बाधक बन रहे थे। वृद्ध ब्राह्मण ने विचार किया कि इस स्थिति से किस तरह उबरकर उसी तरुण ब्राह्मण को कन्यादान किया जाये। किन्तु उसका पुत्र नास्तिक तथा अत्यन्त चालाक व्यक्ति था और वह किसी प्रकार इस विवाह को रोकना चाहता था। पिता तथा पुत्र परस्पर विरोधी ढंग से सोच रहे थे, फिर भी कृष्ण ने ऐसी स्थिति ला दी कि दोनों इस पर सहमत हो गये कि यदि गोपाल-विग्रह आकर साक्षी दें, तो तरुण ब्राह्मण को कन्या दे दी जायेगी।

বড়-বিপ্রের মনে,—'কৃষ্ণ বড় দয়াবান্ ।
অবশ্য মোর বাক্য তেঁহো করিবে প্রমাণ' ॥৭৯॥

বড়-বিপ্রের মনে,—'কৃষ্ণ বড় দয়াবান্ ।
অবশ্য মোর বাক্য তেঁহো করিবে প্রমাণ' ॥ ৭৯ ॥

बड़-विप्रेर मने—वृद्ध ब्राह्मण के मन में; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **बड़**—अत्यन्त; **दयावान्**—दयावान; **अवश्य**—अवश्य; **मोर**—मेरा; **वाक्य**—कथन; **तेंहो**—वे; **करिबे**—करेंगे; **प्रमाण**—सत्य।

अनुवाद

उस वृद्ध ब्राह्मण ने सोचा, "चूँकि भगवान् कृष्ण अत्यन्त दयालु हैं, वे निश्चय ही मेरे कथन को प्रमाणित करने हेतु आयेंगे।"

পুত্রের মনে,—'প্রতিমা না আসিবে সাক্ষী দিতে' ।
এই বুদ্ধ্যে দুই-জন হইলা সম্মতে ॥৮০॥

পুত্রের মনে,—'প্রতিমা না আসিবে সাক্ষী দিতে' ।
এই বুদ্ধ্যে দুই-জন হইলা সম্মতে ॥ ৮০ ॥

पुत्रेर मने—पुत्र के मन में; **प्रतिमा**—मूर्ति; **ना**—नहीं; **आसिबे**—आयेगी; **साक्षी दिते**—साक्षी देने; **एइ**—इस; **बुद्धये**—विचार में; **दुइ-जन**—पिता और पुत्र दोनों; **हइला सम्मते**—सहमत थे।

अनुवाद

नास्तिक पुत्र ने सोचा, "गोपाल के लिए यह सम्भव नहीं कि वे आकर साक्षी दें।" ऐसा सोचकर पिता तथा पुत्र दोनों सहमत हो गये।

छोट-विप्र बले,—'पत्र करह लिखन ।
पूनः येन नाहि चले ए-सब वचन' ॥८१॥
छोट-विप्र बले,—'पत्र करह लिखन ।
पुनः येन नाहि चले ए-सब वचन' ॥८१॥

छोट-विप्र—युवा ब्राह्मण; **बले**—कहता है; **पत्र**—पत्र; **करह**—करो; **लिखन**—लिखना; **पुनः**—पुनः; **येन**—ताकि; **नाहि**—नहीं; **चले**—बदले; **ए-सब**—ये सब; **वचन**—कथन।

अनुवाद

तरुण विप्र ने अवसर पाकर कहा, "कृपया यह बात एक कागज पर स्पष्ट रूप से लिख दें, जिससे फिर आप अपने वचनों को बदल न सकें।"

तबे सब लोक मेलि' पत्र त' लिखिल ।
दूँहार सम्मति लञा मध्यस्थ राखिल ॥८२॥
तबे सब लोक मेलि' पत्र त' लिखिल ।
दुँहार सम्मति लञा मध्यस्थ राखिल ॥८२॥

तबे—तब; **सब लोक**—सब लोग; **मेलि'**—इकट्ठे हुए; **पत्र**—पत्ते पर; **त'**—सचमुच; **लिखिल**—लिख लिया; **दुँहार**—उन दोनों का; **सम्मति**—करारनामा (अनुबन्ध); **लञा**—लेकर; **मध्य-स्थ**—मध्यस्थ; **राखिल**—हो गये।

अनुवाद

वहाँ पर एकत्र सारे लोगों ने यह बात कागज पर स्पष्ट रूप से अंकित करा दी और उन दोनों के हस्ताक्षर लेकर वे मध्यस्थ बन गये।

তবে ছোট-বিপ্র কহে,—শুন, সর্ব-জন ।
এই বিপ্র—সত্য-বাক্য, ধর্ম-পরায়ণ ॥ ৮৩ ॥

तबे छोट-विप्र कहे,—शुन, सर्व-जन ।
एइ विप्र—सत्य-वाक्य, धर्म-परायण ॥ ८३ ॥

तबे—उस समय; **छोट-विप्र**—युवा ब्राह्मण; **कहे**—कहता है; **शुन**—कृपया सुनो; **सर्व-जन**—हे सभी उपस्थित भद्र पुरुषों; **एइ विप्र**—ये वृद्ध ब्राह्मण; **सत्य-वाक्य**—सदा सत्यवादी; **धर्म-परायण**—धर्म परायण हैं।

अनुवाद

तब तरुण ब्राह्मण ने कहा, "यहाँ पर एकत्र सारे लोग कृपया मेरी बात सुनेंगे? यह वृद्ध ब्राह्मण निस्सन्देह सत्यवादी हैं और धर्म का पालन करने वाले हैं।"

স্ব-বাক্য ছাড়িতে ইঁহার নাহি কভু মন ।
স্বজন-মৃত্যু-ভয়ে কহে অসত্য-বচন ॥ ৮৪ ॥

स्व-वाक्य छाड़िते इँहार नाहि कभु मन ।
स्वजन-मृत्यु-भये कहे असत्य-वचन ॥ ८४ ॥

स्व-वाक्य—अपना प्रण; **छाड़िते**—छोड़ना; **इँहार**—इस ब्राह्मण; **नाहि**—नहीं; **कभु**—किसी समय; **मन**—मन; **स्व-जन**—अपने सम्बन्धियों की; **मृत्यु-भये**—आत्महत्या के भय से; **कहे**—कहते हैं; **असत्य-वचन**—असत्य वचन।

अनुवाद

"वे अपना वचन भंग करना नहीं चाहते थे, किन्तु इस भय से कि उसके सम्बन्धी आत्महत्या न कर लें, सत्य के पथ से विचलित हो गये।"

ইঁহার পুণ্যে কৃষ্ণে আনি' সাক্ষী বোলাইব ।
তবে এই বিপ্রের সত্য-প্রতিজ্ঞা রাখিব ॥ ৮৫ ॥

इँहार पुण्ये कृष्णे आनि' साक्षी बोलाइब ।
तबे एइ विप्रेर सत्य-प्रतिज्ञा राखिब ॥ ८५ ॥

इँहार पुण्ये—इसकी पवित्रता से; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण को; **आनि'**—लाकर; **साक्षी**—

साक्षी; **बोलाइब**—मैं बुलाऊँगा; **तबे**—तब; **एइ विप्रेर**—इस ब्राह्मण का; **सत्य**—सत्य; **प्रतिज्ञा**—प्रण; **राखिब**—मैं रखूंगा (सत्य प्रमाणित करूँगा)।

अनुवाद

"मैं इस ब्राह्मण के पुण्य के बल पर भगवान् को साक्षी के रूप में बुलाऊँगा और इसके सत्य वचन की रक्षा करूँगा।"

এত শুনি' নাস্তিক লোক উপহাস করে ।
কেহ বলে, ঈশ্বর—দয়ালু, আসিতেহ পারে ॥৮৬॥

এত শুনি' नास्तिक लोक उपहास करे ।
केह बले, ईश्वर—दयालु, आसितेह पारे ॥८६॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **नास्तिक**—नास्तिक; **लोक**—लोग; **उपहास**—उपहास; **करे**—करते हैं; **केह बले**—कोई कहता है; **ईश्वर**—ईश्वर; **दयालु**—दयालु; **आसितेह पारे**—वे आ सकते हैं।

अनुवाद

उस तरुण विप्र के ऐसे दृढ़ वचन सुनकर उस सभा में उपस्थित कुछ नास्तिक उसका उपहास करने लगे। किन्तु किसी एक ने कहा, "अन्ततः ईश्वर दयालु हैं और चाहें तो आ सकते हैं।"

তবে সেই ছোট-বিপ্র গেলা বৃন্দাবন ।
দণ্ডবৎকরি' কহে সব বিবরণ ॥৮৭॥

तबे सेइ छोट-विप्र गेला वृन्दावन ।
दण्डवत्करि' कहे सब विवरण ॥८७॥

तबे—इसके बाद; **सेइ**—वह; **छोट-विप्र**—युवा ब्राह्मण; **गेला**—चला गया; **वृन्दावन**—वृन्दावन को; **दण्डवत् करि'**—दण्डवत् प्रणाम करने के बाद; **कहे**—कहता है; **सब**—सारा; **विवरण**—विवरण।

अनुवाद

सभा समाप्त होने पर वह तरुण ब्राह्मण वृन्दावन के लिए चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर सर्वप्रथम उसने विग्रह को सादर दंडवत् प्रणाम किया और फिर विस्तार से सारा वृत्तान्त कह सुनाया।

"ब्रह्मण्य-देव तुमि बड़ दया-मय ।
दुई विप्रेर धर्म राख हञा सदय ॥८८॥

"ब्रह्मण्य-देव तुमि बड़ दया-मय ।
दुइ विप्रेर धर्म राख हञा सदय ॥८८॥

ब्रह्मण्य-देव—हे ब्रह्मण्य देव; **तुमि**—आप; **बड़**—बड़े; **दया-मय**—दयालु; **दुइ**—दोनों; **विप्रेर**—ब्राह्मणों के; **धर्म**—धर्म की; **राख**—रक्षा करो; **हञा**—होकर; **स-दय**—दयामय।

अनुवाद

उसने कहा, "हे प्रभु, आप ब्राह्मण संस्कृति के रक्षक हैं और आप अत्यन्त दयावान भी हैं। अतएव आप हम दोनों ब्राह्मणों के धर्म की रक्षा करके अपनी परम दया प्रदर्शित करें।

कन्या पाव,—मोर मने इहा नाहि सुख ।
ब्राह्मणेर प्रतिज्ञा याय—एइ बड़ दुःख ॥८९॥

कन्या पाब,—मोर मने इहा नाहि सुख ।
ब्राह्मणेर प्रतिज्ञा याय—एइ बड़ दुःख ॥८९॥

कन्या पाब—मुझे कन्या मिल जायेगी; **मोर**—मेरे; **मने**—मन में; **इहा**—यह; **नाहि**—नहीं है; **सुख**—सुख, प्रसन्नता; **ब्राह्मणेर**—शुद्ध ब्राह्मण की; **प्रतिज्ञा**—प्रतिज्ञा; **याय**—नष्ट हो जायेगी; **एइ**—यह; **बड़**—बड़े; **दुःख**—दुःख की बात है।

अनुवाद

"हे प्रभु, मैं उसकी कन्या को पत्नी रूप में पाकर सुखी बनने की बात नहीं सोच रहा। मैं तो यह सोच रहा हूँ कि उस ब्राह्मण ने अपना वचन तोड़ा है—यही बात मुझे अत्यधिक पीड़ा पहुँचा रही है।"

तात्पर्य

उस तरुण ब्राह्मण का लक्ष्य विवाह द्वारा वृद्ध ब्राह्मण की कन्या प्राप्त करके भौतिक सुख-भोग और इन्द्रियतृप्ति प्राप्त करना नहीं था। वह तरुण ब्राह्मण इस कारण भगवान् को साक्षी बनाने के उद्देश्य से वृन्दावन नहीं गया था। उसकी एकमात्र चिन्ता यही थी कि उस वृद्ध ब्राह्मण ने किसी बात के लिए वचन दिया था और यदि इस घटना में गोपाल साक्षी नहीं बनते, तो उस वृद्ध

ब्राह्मण को आध्यात्मिक कलंक लगेगा। इसीलिए वह तरुण ब्राह्मण विग्रह का संरक्षण और सहायता चाह रहा था। इस तरह वह ब्राह्मण शुद्ध वैष्णव था और उसमें इन्द्रियतृप्ति की कोई इच्छा नहीं थी। वह तो केवल पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् तथा उस वैष्णव भगवद्भक्त वृद्ध ब्राह्मण की सेवा करना चाहता था।

এত জানি' তুমি সাক্ষী দেহ, দয়া-ময় ।
জানি' সাক্ষী নাহি দেয়, তার পাপ হয় ॥৯০॥

एत जानि' तुमि साक्षी देह, दया-मय ।
जानि' साक्षी नाहि देय, तार पाप हय ॥ ९० ॥

एत जानि'—यह जानकर; **तुमि**—आप; **साक्षी**—साक्षी; **देह**—कृपया दें; **दया-मय**—हे महा दयालु; **जानि'**—जानकर; **साक्षी**—साक्षी; **नाहि देय**—नहीं देता है; **तार**—उसके लिए; **पाप**—पाप; **हय**—है।

अनुवाद

उस तरुण ब्राह्मण ने आगे कहा, "हे प्रभु, आप अत्यन्त कृपालु तथा सर्वज्ञ हैं। अतएव कृपया इस मामले में साक्षी बनें। जो व्यक्ति सही बातें जानते हुए भी साक्षी नहीं बनता, वह पापकर्म का भागी होता है।"

तात्पर्य

भक्त तथा भगवान् के आपसी व्यवहार अत्यन्त सरल होते हैं। तरुण ब्राह्मण ने भगवान् से कहा, "आप हर बात को जानने वाले हैं, किन्तु यदि आप साक्षी नहीं बनेंगे, तो आप को पाप लगेगा।" किन्तु ऐसे पापकर्मों में भगवान् के लिप्त होने की कोई सम्भावना नहीं है। यद्यपि शुद्ध भक्त भगवान् के विषय में सब कुछ जानता है, किन्तु वह उनसे उसी तरह बातें कर सकता है जैसे किसी सामान्य मनुष्य से बातें की जाती हैं। यद्यपि भगवान् तथा उनके भक्त का परस्पर व्यवहार अत्यन्त स्पष्ट तथा सरल होता है, तथापि उसमें औपचारिकता रहती है। भगवान् तथा भक्त के बीच सम्बन्ध होने के कारण ये सारी बातें सम्भव होती हैं।

কৃষ্ণ কহে,—বিপ্র, তুমি যাহ স্ব-ভবনে ।
সভা করি' মোরে তুমি করিহ স্মরণে ॥৯১॥

कृष्ण कहे,—विप्र, तुमि ग्राह स्व-भवने ।
सभा करि' मोरे तुमि करिह स्मरणे ॥ ९१ ॥

कृष्ण कहे—भगवान् कृष्ण कहते हैं; **विप्र**—मेरे प्रिय ब्राह्मण; **तुमि**—तुम; **ग्राह**—लौट जाओ; **स्व-भवने**—अपने घर को; **सभा करि'**—सभी लोगों की सभा बुलाकर; **मोरे**—मुझे; **तुमि**—तुम; **करिह**—बस करो; **स्मरणे**—याद।

अनुवाद

कृष्ण ने उत्तर दिया, "हे ब्राह्मण, तुम अपने घर लौट जाओ और वहाँ सारे लोगों को बुलाकर एक सभा करो। उस सभा में तुम मेरा स्मरण मात्र करना।

আবির্ভাব হঞা আমি তাহাঁ সাক্ষী দিব ।
তবে দুই বিপ্রের সত্য প্রতিজ্ঞা রাখিব ॥৯২॥
আবির্ভাব হঞা আমি তাহাঁ সাক্ষী দিব ।
তবে দুই বিপ্রের সত্য প্রতিজ্ঞা রাখিব ॥ ৯২ ॥

আবির্ভাব—प्रकट; **হঞা**—होकर ; **আমি**—मैं; **তাহাঁ**—वहाँ; **সাক্ষী**—साक्षी; **দিব**—दूँगा; **তবে**—तब; **দুই**—दोनों; **বিপ্রের**—ब्राह्मणों की; **সত্য**—सत्य; **প্রতিজ্ঞা**—प्रतिज्ञा; **রাখিব**—रखूँगा।

अनुवाद

"मैं वहाँ निश्चित रूप से प्रकट होऊँगा और उस समय मैं दिए हुए वचन का साक्षी बनकर तुम दोनों के सम्मान की रक्षा करूँगा।"

বিপ্র বলে,—"যদি হও চতুর্ভুজ-মূর্তি ।
তবু তোমার বাক্যে কারু না হবে প্রতীতি ॥৯৩॥
বিপ্র বলে,—"যদি হও চতুর্ভুজ-মূর্তি ।
তবু তোমার বাক্যে কারু না হবে প্রতীতি ॥ ৯৩ ॥

বিপ্র বলে—युवा ब्राह्मण कहता है; **যদি**—यदि; **হও**—आप हो जाते हो; **চতুঃ-ভুজ**—चतुर्भुज-धारी; **মূর্তি**—मूर्ति; **তবু**—तब; **তোমার**—आपके; **বাক্যে**—शब्द में; **কারু**—किसी का; **না**—नहीं; **হবে**—होगा; **প্রতীতি**—विश्वास।

अनुवाद

तरुण ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, भले ही आप चतुर्भुज विष्णु-रूप में क्यों न प्रकट हों, तब भी उन लोगों में से कोई भी आपके वाक्यों पर विश्वास नहीं करेगा।

এই মূর্তি গিয়া যদি এই শ্রী-বদনে ।
সাক্ষী দেহ যদি—তবে সর্ব-লোক শুনে'' ॥৯৪॥

এइ মূর্তি গিয়া যদি এइ শ্রী-বদনে ।
সাক্ষী দেহ যদি—তবে সর্ব-লোক শুনে" ॥ ৯৪॥

এइ—यह; **मूर्ति**—मूर्ति; **गिया**—जाकर; **यदि**—यदि; **एइ**—यह; **श्री-वदने**—अपने सुन्दर मुख से; **साक्षी**—साक्षी; **देह**—देते हो; **यदि**—यदि; **तबे**—तब; **सर्व-लोक**—सभी लोग; **शुने**—सुनेंगे।

अनुवाद

"किन्तु यदि आप इसी गोपाल-रूप में वहाँ चलें और अपने श्रीमुख से कहें, तभी आपकी साक्षी सभी लोगों द्वारा सुनी जायेगी।"

কৃষ্ণ কহে,—''প্রতিমা চলে, কোথাহ না শুনি'' ।
বিপ্র বলে,—''প্রতিমা হঞা কহ কেনে বাণী ॥৯৫॥

কৃষ্ণ কহে,—"প্রতিমা চলে, কোথাহ না শুনি" ।
বিপ্র বলে,—"প্রতিমা হঞা কহ কেনে বাণী ॥ ৯৫॥

कृष्ण कहे—भगवान् कृष्ण कहते हैं; **प्रतिमा चले**—मूर्ति चलती है; **कोथाह**—कहीं भी; **ना शुनि**—मैंने नहीं सुना है; **विप्र बले**—ब्राह्मण उत्तर देता है; **प्रतिमा हञा**—अपने मूर्तिरूप में; **कह केने वाणी**—आप बोल कैसे रहे हैं।

अनुवाद

भगवान् कृष्ण ने कहा, "मैंने आज तक किसी विग्रह को एक स्थान से दूसरे स्थान तक चलकर जाते नहीं सुना।" ब्राह्मण ने कहा, "यह सत्य है, किन्तु यह कैसे सम्भव हो रहा है कि आप विग्रह होकर भी मुझसे बातें कर रहे हैं।

প্রতিমা নহ তুমি—সাক্ষাদ্ব্রজেন্দ্র-নন্দন ।
বিপ্র লাগি' কর তুমি অকার্য-করণ'' ॥৯৬॥

प्रतिमा नह तुमि—साक्षात्व्रजेन्द्र-नन्दन ।
विप्र लागि' कर तुमि अकार्य्य-करण" ॥ ९६ ॥

प्रतिमा—मूर्ति; **नह**—नहीं हैं; **तुमि**—आप; **साक्षात्**—साक्षात्; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—नन्द महाराज के पुत्र; **विप्र लागि'**—ब्राह्मण के लिए; **कर तुमि**—आप कर सकते हैं; **अकार्य्य-करण**—कोई भी कार्य जो आपने पहले न किया हो।

अनुवाद

"हे प्रभु, आप मूर्ति नहीं हैं, आप तो साक्षात् महाराज नन्द के पुत्र हैं। आप उस वृद्ध ब्राह्मण के लिए आप ऐसा कुछ कर सकते हैं, जो आपने अभी तक न किया हो।"

হাসিঞা গোপাল কহে,—''শুনহ, ব্রাহ্মণ ।
তোমার পাছে পাছে আমি করিব গমন ॥৯৭॥

हासिञा गोपाल कहे,—"शुनह, ब्राह्मण ।
तोमार पाछे पाछे आमि करिब गमन ॥ ९७ ॥

हासिञा—हँसकर; **गोपाल**—भगवान् गोपाल; **कहे**—कहते हैं; **शुनह**—जरा सुनो; **ब्राह्मण**—हे मेरे प्रिय ब्राह्मण; **तोमार**—तुम्हारे; **पाछे पाछे**—पीछे पीछे; **आमि**—मैं; **करिब**—करूँगा; **गमन**—गमन (चलूंगा)।

अनुवाद

श्री गोपाल ने मुस्कराते हुए कहा, "हे प्रिय ब्राह्मण, मेरी बात सुनो। मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चलूँगा और इस तरह तुम्हारे साथ चलूँगा।"

तात्पर्य

भगवान् कृष्ण तथा इस ब्राह्मण के बीच हुई बातचीच इसका प्रमाण है कि भगवान् की *अर्चा-मूर्ति* भौतिक नहीं है, क्योंकि भगवद्गीता के अनुसार जिन तत्त्वों से मूर्ति बनी है, वे भगवान् से पृथक् होकर भी भगवान् की शक्ति के अंश हैं। चूँकि सारे तत्त्व भगवान् की शक्ति हैं और चूँकि शक्ति तथा शक्तिमान में कोई अन्तर नहीं होता, अतएव भगवान् किसी भी तत्त्व के द्वारा प्रकट हो

सकते हैं। जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश द्वारा प्रकट होकर सर्वत्र प्रकाश तथा ऊष्मा वितरित कर सकता है, उसी प्रकार कृष्ण अपनी अचिन्त्य शक्ति के द्वारा किसी भी भौतिक तत्त्व से—चाहे वह पत्थर हो या काष्ठ, पेंट, सोना, चांदी, रत्न, अपने आदि रूप में प्रकट हो सकते हैं, क्योंकि सारे भौतिक तत्त्व उनकी शक्ति हैं। शास्त्र चेतावनी देते हैं—*अर्च्ये विष्णौ शिला-धीः...नारकी सः*—मन्दिर में स्थापित अर्चाविग्रह को कभी भी पत्थर, काष्ठ या अन्य कोई भौतिक तत्त्व नहीं मानना चाहिए। वह तरुण ब्राह्मण भक्ति में उन्नत होने के कारण जानता था कि यद्यपि गोपाल-विग्रह पत्थर के लगते हैं, किन्तु वास्तव में वे पत्थर नहीं हैं। वे नन्द महाराज के पुत्र, साक्षात् व्रजेन्द्रनन्दन हैं। फलस्वरूप, अर्चाविग्रह कृष्ण के आदिरूप की ही तरह कार्य कर सकता है।

भगवान् कृष्ण उस तरुण ब्राह्मण के अर्चाविग्रह के विषय में ज्ञान की परीक्षा करने के निमित्त बातें कर रहे थे। दूसरे शब्दों में, जिन लोगों ने कृष्ण-विज्ञान—कृष्ण के नाम, रूप, गुण आदि—को समझ लिया है, वे विग्रह से बातें भी कर सकते हैं। किन्तु सामान्य व्यक्ति के लिए अर्चाविग्रह पत्थर, काष्ठ या किसी अन्य पदार्थ से बना प्रतीत होगा। इसका उच्चतर अर्थ यह हुआ कि सारे भौतिक तत्त्व अन्ततोगत्वा सर्वोपरि दिव्य पुरुष से उद्भूत होते हैं, अतएव वास्तव में कुछ भी भौतिक नहीं है। सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी तथा सर्वज्ञ होने के कारण कृष्ण अपने भक्तों से बिना किसी कठिनाई के किसी भी तरह व्यवहार कर सकते हैं। भगवत्कृपा से भक्त भगवान् के व्यवहार से भलीभाँति परिचित होता है। वह निश्चय ही, भगवान् से आमने-सामने बातें कर सकता है।

উলটিয়া আমা তুমি না করিহ দরশনে ।
আমাকে দেখিলে, আমি রহিব সেই স্থানে ॥৯৮॥

उलटिया आमा तुमि ना करिह दरशने ।
आमाके देखिले, आमि रहिब सेइ स्थाने ॥ ९८ ॥

उलटिया—मुड़कर; **आमा**—मुझे; **तुमि**—तुम; **ना**—नहीं; **करिह**—करना; **दरशने**—दर्शन; **आमाके**—मुझे; **देखिले**—यदि तुम देखोगे; **आमि**—मैं; **रहिब**—रुक जाऊँगा; **सेइ स्थाने**—उसी स्थान पर।

अनुवाद

भगवान् ने कहा, "तुम मुझे मुड़कर देखने का प्रयत्न मत करना। अन्यथा तुम ज्योंहीं मेरी ओर देखोगे, मैं उसी स्थान पर स्थिर हो जाऊँगा।

নূপুরের ধ্বনি-মাত্র আমার শুনিবা ।
সেই শব্দে আমার গমন প্রতীতি করিবা ॥৯৯॥

নূপুরের ধ্বনি-মাত্র আমার শুনিবা ।
সেই শব্দে আমার গমন প্রতীতি করিবা ॥ ৯৯ ॥

নূপুরের—नूपुरों की; **ধ্বনি-মাত্র**—ध्वनि मात्र; **আমার**—मेरी; **শুনিবা**—सुनोगे; **সেই শব্দে**—उस ध्वनि को सुनने से; **আমার**—मेरा; **গমন**—चलना; **প্রতীতি**—समझ; **করিবা**—लोगे।

अनुवाद

"तुम मेरे नुपुर की ध्वनि से जानोगे कि मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चल रहा हूँ।

এক-সের অন্ন রান্ধি' করিহ সমর্পণ ।
তাহা খাঞা তোমার সঙ্গে করিব গমন ॥১০০॥

এক-সের অন্ন রান্ধি' করিহ সমর্পণ ।
তাহা খাঞা তোমার সঙ্গে করিব গমন ॥ ১০০ ॥

এক-সের—एक किलो; **অন্ন**—चावल; **রান্ধি'**—पकाकर; **করিহ**—करो; **সমর্পণ**—समर्पण; **তাহা**—वह; **খাঞা**—खाऊँगा; **তোমার**—तुम्हारे; **সঙ্গে**—साथ; **করিব**—मैं करूँगा; **গমন**—गमन।

अनुवाद

"प्रतिदिन एक किलो चावल पकाकर मुझे अर्पित करना। मैं उसी चावल को खाऊँगा और तुम्हारे पीछे-पीछे चलूँगा।"

আর দিন আজ্ঞা মাগি' চলিলা ব্রাহ্মণ ।
তার পাছে পাছে গোপাল করিলা গমন ॥১০১॥

आर दिन आज्ञा मागि' चलिला ब्राह्मण ।
तार पाछे पाछे गोपाल करिला गमन ॥ १०१ ॥

आर दिन—अगले दिन; **आज्ञा**—आज्ञा; **मागि'**—माँगकर; **चलिला**—चल पड़ा; **ब्राह्मण**—युवा ब्राह्मण; **तार**—उसके; **पाछे**—पीछे; **पाछे**—पीछे; **गोपाल**—भगवान् गोपाल; **करिला**—आरम्भ किया; **गमन**—चलना।

अनुवाद

अगले दिन ब्राह्मण ने गोपाल से आज्ञा माँगी और वह अपने देश के लिए चल पड़ा। गोपाल भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े।

नूपुरेर ध्वनि शुनि' आनन्दित मन ।
उत्तमान्न पाक करि' कराय भोजन ॥ १०२ ॥

नूपुरेर ध्वनि शुनि' आनन्दित मन ।
उत्तमान्न पाक करि' कराय भोजन ॥ १०२ ॥

नूपुरेर—नुपूर की; **ध्वनि**—ध्वनि; **शुनि'**—सुनकर; **आनन्दित**—आनन्दित; **मन**—मन; **उत्तम-अन्न**—उत्तम भात; **पाक**—पकाकर; **करि'**—करके; **कराय**—करवाया; **भोजन**—भोजन।

अनुवाद

जब गोपाल उस तरुण ब्राह्मण के पीछे चल रहे थे, तो उनके नुपुरों की रूनझुन ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। वह ब्राह्मण अत्यधिक प्रसन्न हुआ और उसने उत्तम चावल गोपाल के भोग के लिए पकाया।

एइ-मते चलि' विप्र निज-देशे आइला ।
ग्रामेर निकट आसि' मनेते चिन्तिला ॥ १०३ ॥

एइ-मते चलि' विप्र निज-देशे आइला ।
ग्रामेर निकट आसि' मनेते चिन्तिला ॥ १०३ ॥

एइ-मते—इस प्रकार; **चलि'**—चलकर; **विप्र**—ब्राह्मण; **निज**—अपने; **देशे**—देश को; **आइला**—लौट गया; **ग्रामेर**—गाँव के; **निकट**—निकट; **आसि'**—आकर; **मनेते**—अपने मन में; **चिन्तिला**—सोचने लगा।

अनुवाद

इस प्रकार यह तरुण ब्राह्मण चलता रहा, जब तक कि वह अपने देश में नहीं पहुँच गया। जब वह अपने गाँव के निकट पहुँचा, तो वह इस प्रकार सोचने लगा।

'एबे मुञि ग्रामे आइनु, याइमु भवन ।
लोकेरे कहिब गिया साक्षीर आगमन ॥ १०४॥

'एबे मुञि ग्रामे आइनु, याइमु भवन ।
लोकेरे कहिब गिया साक्षीर आगमन ॥ १०४॥

एबे—अब; **मुञि**—मैं; **ग्रामे**—गाँव में; **आइनु**—आ गया हूँ; **याइमु**—मैं जाऊँगा; **भवन**—अपने घर; **लोकेरे**—लोगों को; **कहिब**—कहूँगा; **गिया**—वहाँ जाकर; **साक्षीर**—साक्षी के; **आगमन**—आने के बारे में।

अनुवाद

"अब मैं अपने गाँव पहुँच चुका हूँ और अपने घर जाकर सभी लोगों को बतलाऊँगा कि साक्षी आ गया है।"

साक्षातें ना देखिले मने प्रतीति ना हय ।
इहाँ यदि रहेन, तबु नाहि किछु भय' ॥ १०५॥

साक्षाते ना देखिले मने प्रतीति ना हय ।
इहाँ यदि रहेन, तबु नाहि किछु भय' ॥ १०५॥

साक्षाते—साक्षात्; **ना**—न; **देखिले**—यदि देखेंगे; **मने**—मन में; **प्रतीति**—विश्वास; **ना**—नहीं; **हय**—होगा; **इहाँ**—यहाँ; **यदि**—यदि; **रहेन**—भगवान् रहें; **तबु**—फिर भी; **नाहि**—नहीं होगा; **किछु**—कोई; **भय**—भय।

अनुवाद

उस ब्राह्मण ने सोचा कि यदि गाँव वाले गोपाल-विग्रह का प्रत्यक्ष दर्शन नहीं करेंगे, तो उन्हें विश्वास नहीं होगा कि गोपाल आ गये हैं। उसने सोचा, "किन्तु यदि गोपाल यहीं पर ही रह जाएँ, तो भी डर की कोई बात नहीं है।"

এত ভাবি' সেই বিপ্র ফিরিয়া চাহিল ।
হাসিঞা গোপাল-দেব তথায় রহিল ॥ ১০৬॥

এত ভাবি' সেই বিপ্র ফিরিয়া চাহিল ।
হাসিঞা গোপাল-দেব তথায় রহিল ॥ ১০৬॥

এত ভাবি'—इस प्रकार सोचकर; **सेइ**—उस; **विप्र**—ब्राह्मण ने; **फिरिया**—पीछे मुड़कर; **चाहिल**—देखा; **हासिञा**—मुस्कुराकर; **गोपाल-देव**—भगवान् गोपाल देव, परम भगवान्; **तथाय**—वहाँ; **रहिल**—खड़े थे।

अनुवाद

यह सोचकर वह देखने के लिए पीछे मुड़ा और उसने देखा कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् गोपाल मुसकाते हुए वहाँ खड़े थे।

ब्राह्मणेरे कहे,—"तुमि याह निज-घर ।
एथाय रहिब आमि, ना याब अतःपर" ॥ १०७॥

ब्राह्मणेरे कहे,—"तुमि याह निज-घर ।
एथाय रहिब आमि, ना याब अतःपर" ॥ १०७॥

ब्राह्मणेरे कहे—उन्होंने ब्राह्मण से कहा; **तुमि**—तुम; **याह**—जाओ; **निज-घर**—अपने घर; **एथाय**—यहाँ इस स्थान पर; **रहिब**—रहूँगा; **आमि**—मैं; **ना**—नहीं; **याब**—जाऊँगा; **अतःपर**—इससे आगे।

अनुवाद

भगवान् ने ब्राह्मण से कहा, "अब तुम घर जा सकते हो। मैं यहीं रुकूँगा और कहीं नहीं जाऊँगा।"

তবে সেই বিপ্র যাই নগরে কহিল ।
শুনিঞা সকল লোক চমৎকার হৈল ॥ ১০৮॥

তবে সেই বিপ্র যাই নগরে কহিল ।
শুনিঞা সকল লোক চমৎকার হৈল ॥ ১০৮॥

তবে—तब; **सेइ**—वह; **विप्र**—ब्राह्मण; **याइ**—गया; **नगरे**—नगर को; **कहिल**—और कहा; **शुनिञा**—सुनकर; **सकल**—सभी; **लोक**—लोग; **चमत्कार**—चकित; **हैल**—हो गये।

अनुवाद

तब उस ब्राह्मण ने अपने गाँव जाकर सबको गोपाल के आगमन की जानकारी दी। यह सुनकर सारे लोग आश्चर्यचकित हो उठे।

আইল সকল লোক সাক্ষী দেখিবারে ।
গোপাল দেখিঞা লোক দণ্ডবৎকরে ॥১০৯॥

আইল সকল লোক সাক্ষী দেখিবারে ।
গোপাল দেখিঞা লোক দণ্ডবত্ করে ॥১০৯॥

आइल—आये; **सकल**—सभी; **लोक**—लोग; **साक्षी**—साक्षी; **देखिबारे**—देखने के लिए; **गोपाल**—भगवान् गोपाल को; **देखिञा**—देखकर; **लोक**—सभी लोग; **दण्डवत्**—दण्डवत् प्रणाम; **करे**—करने लगे।

अनुवाद

गाँव के सारे वासी साक्षीगोपाल को देखने गये और जब उन्होंने सचमुच भगवान् को खड़े देखे, तो सबने उन्हें सादर दंडवत् प्रणाम किया।

গোপাল-সৌন্দর্য দেখি' লোকে আনন্দিত ।
প্রতিমা চলিঞা আইলা,—শুনিঞা বিস্মিত ॥১১০॥

গোপাল-সৌন্দর্য্য দেখি' লোকে আনন্দিত ।
প্রতিমা চলিঞা আইলা,—শুনিঞা বিস্মিত ॥১১০॥

गोपाल—भगवान् गोपाल के; **सौन्दर्य्य**—सौन्दर्य को; **देखि'**—देखकर; **लोके**—प्रत्येक व्यक्ति; **आनन्दित**—आनन्दित हो गया; **प्रतिमा**—मूर्ति; **चलिञा**—चलकर; **आइला**—आई है; **शुनिञा**—यह सुनकर; **विस्मित**—चकित।

अनुवाद

लोग गोपाल की सुन्दरता देखकर अत्यधिक प्रसन्न थे और जब उन लोगों ने यह सुना कि वे सचमुच चलकर आये हैं, तो उन सबके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

তবে সেই বড়-বিপ্র আনন্দিত হঞা ।
গোপালের আগে পড়ে দণ্ডবৎ হঞা ॥১১১॥

तबे सेइ बड़-विप्र आनन्दित हञा ।
गोपालेर आगे पड़े दण्डवत् हञा ॥ १११ ॥

तबे—इसके बाद; **सेइ**—वह; **बड़-विप्र**—वृद्ध ब्राह्मण; **आनन्दित**—आनन्दित; **हञा**—होकर; **गोपालेर**—भगवान् गोपाल के; **आगे**—समक्ष; **पड़े**—गिर पड़ा; **दण्डवत्**—दण्डवत्; **हञा**—होकर।

अनुवाद

तब वह वृद्ध ब्राह्मण भी परम आनन्दित होकर गोपाल के सम्मुख आया और तुरन्त ही दण्ड के समान पृथ्वी पर गिर पड़ा।

सकल लोकेर आगे गोपाल साक्षी दिल ।
बड़-विप्र छोट-विप्रे कन्या-दान कैल ॥ ११२ ॥
सकल लोकेर आगे गोपाल साक्षी दिल ।
बड़-विप्र छोट-विप्रे कन्या-दान कैल ॥ ११२ ॥

सकल—सभी; **लोकेर**—लोगों की; **आगे**—उपस्थिति में; **गोपाल**—भगवान् गोपाल ने; **साक्षी**—साक्षी; **दिल**—दी; **बड़-विप्र**—वृद्ध ब्राह्मण ने; **छोट-विप्रे**—युवा ब्राह्मण को; **कन्या-दान**—कन्यादान; **कैल**—किया।

अनुवाद

इस तरह गाँव-भर के निवासियों के समक्ष गोपाल इसके साक्षी बने कि उस वृद्ध ब्राह्मण ने तरुण ब्राह्मण को अपनी कन्या दान में दी थी।

तबे सेई दुई विप्रे कहिल ईश्वर ।
"तुमि-दुई—जन्मे-जन्मे आमार किङ्कर ॥ ११३ ॥
तबे सेइ दुइ विप्रे कहिल ईश्वर ।
"तुमि-दुइ—जन्मे-जन्मे आमार किङ्कर ॥ ११३ ॥

तबे—तब; **सेइ**—वे; **दुइ**—दोनों; **विप्रे**—ब्राह्मणों को; **कहिल**—कहा; **ईश्वर**—भगवान्; **तुमि-दुइ**—तुम दोनों; **जन्मे-जन्मे**—जन्म-जन्मांतर; **आमार**—मेरे; **किङ्कर**—दास।

अनुवाद

विवाह सम्पन्न हो जाने के बाद भगवान् ने उन दोनों ब्राह्मणों को बतलाया, "तुम दोनों ब्राह्मण जन्म-जन्मांतर से मेरे सनातन दास हो।"

तात्पर्य

विद्यानगर के इन दो ब्राह्मणों की तरह ही ऐसे अनेक भक्त हैं, जो भगवान् के सनातन दास हैं। वे *नित्य-सिद्ध* कहलाते हैं। यद्यपि ये नित्य-सिद्ध भौतिक जगत् में प्रकट होते हैं और सामान्य व्यक्ति प्रतीत होते हैं, किन्तु वे किसी भी परिस्थिति में पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् को भूलते नहीं। *नित्य-सिद्ध* का यही लक्षण है।

जीव दो प्रकार के होते हैं—*नित्य-सिद्ध* तथा *नित्य-बद्ध*। नित्य-सिद्ध भगवान् के साथ अपने सम्बन्ध को कभी नहीं भूलता, जबकि *नित्य-बद्ध* सृष्टि के पूर्व से भी सदैव बद्ध रहता है। वह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के साथ अपने सम्बन्ध को सदा भूलता रहता है। यहाँ पर भगवान् उन दोनों ब्राह्मणों को बतलाते हैं कि वे जन्म-जन्मांतर से उनके नित्य-दास हैं। जन्म-जन्मांतर भौतिक जगत् की ओर संकेत करता है, क्योंकि आध्यात्मिक जगत् में जन्म, मृत्यु, जरा तथा व्याधि नहीं होते। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के आदेश से नित्य-सिद्ध इस भौतिक जगत् में सामान्य व्यक्ति की तरह रहता है, किन्तु नित्य-सिद्ध का एकमात्र कार्य होता है भगवान् की महिमा का प्रचार करना। यह घटना दो सामान्य व्यक्तियों के बीच के वैवाहिक सम्बन्ध की सामान्य कहानी प्रतीत होती है। किन्तु कृष्ण ने इन दोनों ब्राह्मणों को अपने सनातन सेवकों के रूप में स्वीकार किया। दोनों ब्राह्मणों ने इस समझौते के लिए भौतिक लोगों की तरह अनेक कष्ट उठाये, फिर भी वे भगवान् के सनातन सेवकों की तरह कर्म कर रहे थे। इस भौतिक जगत् में सारे नित्य-सिद्ध भले ही सामान्य व्यक्तियों की तरह श्रम करते प्रतीत हों, किन्तु वे यह कभी नहीं भूलते कि वे भगवान् के नित्य दास हैं।

दूसरी बात : वृद्ध ब्राह्मण कुलीन था और विद्वान तथा सम्पन्न था। तरुण ब्राह्मण साधारण परिवार का था और अशिक्षित था। किन्तु भगवान् की सेवा में लगे *नित्य-सिद्ध* के लिए इन भौतिक योग्यताओं का कोई महत्त्व नहीं होता। हमें यह तथ्य मानना ही पड़ेगा कि नित्य-सिद्ध सामान्य मनुष्यों से, जो नित्य-बद्ध कहलाते हैं, सर्वथा भिन्न होते हैं। इस कथन की पुष्टि श्रील नरोत्तम दास ठाकुर ने की है :

गोराङ्गेर सङ्गि-गणे, नित्यसिद्ध करि 'माने
से याय व्रजेन्द्रसुत पाश।
श्रीगौड़-मण्डल-भूमि, येबा जाने चिन्तामणि
तार हय व्रजभूमे वास।

जो व्यक्ति भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के पार्षदों को नित्यसिद्ध के रूप में स्वीकार करता है, वह निश्चित रूप से वैकुण्ठ लोक जाकर भगवान् का पार्षद बनता है। हमें यह भी जानना चाहिए कि बंगाल के वे स्थान जहाँ-जहाँ चैतन्य महाप्रभु रहे—अर्थात् गौड़-मण्डल-भूमि—वे व्रजभूमि या वृन्दावन के समान है। वृन्दावन तथा गौड़-मण्डल-भूमि अथवा श्रीधाम मायापुर के निवासियों में किसी तरह का अन्तर नहीं है।

दुँहार सत्ये तुष्ट हइलाँ, दुँहे माग' वर'' ।
दुइ-विप्र वर मागे आनन्द-अन्तर ॥ ११४॥

दुँहार सत्ये तुष्ट हइलाँ, दुँहे माग' वर" ।
दुइ-विप्र वर मागे आनन्द-अन्तर ॥ ११४॥

दुँहार सत्ये—दोनों की सच्चाई; **तुष्ट हइलाँ**—मैं सन्तुष्ट हो गया हूँ; **दुँहे**—तुम दोनों; **माग'**—माँगो; **वर**—कुछ वरदान; **दुइ-विप्र**—दोनों ब्राह्मण; **वर**—एक वर; **मागे**—माँगते हैं; **आनन्द**—आनन्दित होकर; **अन्तर**—मन में।

अनुवाद

भगवान् ने कहा, "मैं तुम दोनों की सच्चाई से अतीव प्रसन्न हुआ हूँ। अब तुम वर माँग सकते हो।" इस तरह दोनों ब्राह्मणों ने अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक वर माँगा।

''यदि वर दिबे, तबे रह एइ स्थाने ।
किङ्करेरे दया तव सर्व-लोके जाने'' ॥ ११५॥

"यदि वर दिबे, तबे रह एइ स्थाने ।
किङ्करेरे दया तव सर्व-लोके जाने" ॥ ११५॥

यदि—यदि; **वर**—वर; **दिबे**—आप देंगे; **तबे**—तब; **रह**—रहो; **एइ स्थाने**—इसी स्थान

पर; **किङ्करेरे**—अपने दासों पर; **दया**—कृपा; **तव**—आपकी; **सर्व-लोके**—सब लोग; **जाने**—जान लें।

अनुवाद

उन ब्राह्मणों ने कहा, "कृपा करके आप यहीं रहें, जिससे सारे संसार के लोग जान सकें कि आप अपने सेवकों पर कितने कृपालु हैं।"

গোপাল রহিলা, দুঁহে করেন সেবন ।
দেখিতে আইলা সব দেশের লোক-জন ॥১১৬॥

গোপাল রহিলা, দুঁহে করেন সেবন ।
দেখিতে আইলা সব দেশের লোক-জন ॥ ১১৬ ॥

গোপাল—भगवान् गोपाल; **রহিলা**—रह गये; **দুঁহে**—वे दोनों; **করেন**—करते हैं; **সেবন**—सेवा; **দেখিতে**—देखने के लिए; **আইলা**—आये; **সব**—सब; **দেশের**—देशों के; **লোক-জন**—लोग।

अनुवाद

भगवान् गोपाल वहीं रहने लगे और दोनों ब्राह्मण उनकी सेवा में लग गये। यह घटना सुनकर विभिन्न देशों से अनेक लोग गोपाल का दर्शन करने के लिए आने लगे।

সে দেশের রাজা আইল আশ্চর্য শুনিঞা ।
পরম সন্তোষ পাইল গোপালে দেখিঞা ॥১১৭॥

সে দেশের রাজা আইল আশ্চর্য্য শুনিঞা ।
পরম সন্তোষ পাইল গোপালে দেখিঞা ॥ ১১৭ ॥

সে দেশের—उस देश का; **রাজা**—राजा; **আইল**—आया; **আশ্চর্য্য**—आश्चर्य; **শুনিঞা**—सुनकर; **পরম**—परम; **সন্তোষ**—सन्तोष; **পাইল**—पाया; **গোপালে**—गोपाल को; **দেখিঞা**—देखकर।

अनुवाद

अन्त में उस देश के राजा ने यह आश्चर्यजनक कथा सुनी, तो वह भी गोपाल का दर्शन करने के लिए आया और अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ।

मन्दिर करिया राजा सेवा चालाइल ।
'साक्षि-गोपाल' बलि' ताँर नाम ख्याति हैल ॥ ११८ ॥

मन्दिर करिया राजा सेवा चालाइल ।
'साक्षि-गोपाल' बलि' ताँर नाम ख्याति हैल ॥ ११८ ॥

मन्दिर—एक मन्दिर; **करिया**—बनवाकर; **राजा**—राजा; **सेवा**—सेवा; **चालाइल**—नियमपूर्वक करने लगा; **साक्षि-गोपाल**—साक्षीगोपाल के नाम से; **बलि'**—जानकर; **ताँर**—उनका; **नाम**—नाम; **ख्याति**—प्रसिद्ध; **हैल**—हो गया।

अनुवाद

उस राजा ने एक सुन्दर मन्दिर बनवा दिया और नियमित सेवा प्रारम्भ करवाई। गोपाल साक्षीगोपाल के नाम से अत्यन्त विख्यात हो गये।

एइ मत विद्यानगरे साक्षि-गोपाल ।
सेवा अङ्गीकार करि' आछेन चिर-काल ॥ ११९ ॥

एइ मत विद्यानगरे साक्षि-गोपाल ।
सेवा अङ्गीकार करि' आछेन चिर-काल ॥ ११९ ॥

एइ मत—इस प्रकार; **विद्यानगरे**—विद्यानगर नगर में; **साक्षि-गोपाल**—साक्षीगोपाल; **सेवा**—सेवा; **अङ्गीकार**—स्वीकार; **करि'**—करके; **आछेन**—रहते हैं; **चिर-काल**—चिरकाल।

अनुवाद

इस प्रकार साक्षीगोपाल ने विद्यानगर में रहकर दीर्घकाल तक सेवा स्वीकार की।

तात्पर्य

विद्यानगर दक्षिण भारत में त्रैलङ्ग देश में गोदावरी नदी के तट पर स्थित है। जिस स्थान पर गोदावरी नदी बंगाल की खाड़ी में गिरती है, वह कोटदेश कहलाता है। उड़ीसा साम्राज्य अत्यन्त शक्तिशाली था और कोटदेश उड़ीसा की राजधानी था। तब यह विद्यानगर कहलाता था। पहले यह नगर गोदावरी नदी के दक्षिणी तट पर बसा था। उस समय राजा पुरुषोत्तम देव उड़ीसा में राज्य करते थे। वर्तमान विद्यानगर शहर नदी के दक्षिण-पूर्व में है और राजमहेन्द्री

से केवल २०-२५ मील दूर है। महाराज प्रतापरुद्र के काल में वहाँ के गवर्नर श्री रामानन्दराय थे। विजयनगर तथा विद्यानगर एक नहीं हैं।

उत्कलेर राजा पुरुषोत्तम-देव नाम ।
सेई देश जिनि' निल करिया सङ्ग्राम ॥ १२० ॥

उत्कलेर राजा पुरुषोत्तम-देव नाम ।
सेइ देश जिनि' निल करिया सङ्ग्राम ॥ १२० ॥

उत्कलेर—उड़ीसा के; **राजा**—राजा; **पुरुषोत्तमदेव**—पुरुषोत्तम देव; **नाम**—नामक; **सेइ देश**—यह देश; **जिनि'**—जीतकर; **निल**—लिया; **करिया**—करके; **सङ्ग्राम**—युद्ध।

अनुवाद

बाद में युद्ध हुआ जिसमें उड़ीसा के राजा पुरुषोत्तम देव ने इस देश को जीत लिया।

सेई राजा जिनि' निल ताँर सिंहासन ।
'माणिक्य-सिंहासन' नाम अनेक रतन ॥ १२१ ॥

सेइ राजा जिनि' निल ताँर सिंहासन ।
'माणिक्य-सिंहासन' नाम अनेक रतन ॥ १२१ ॥

सेइ राजा—उस राजा (महाराज पुरुषोत्तम देव) ने; **जिनि'**—जीतकर; **निल**—ले लिया; **ताँर**—अपना; **सिंह-आसन**—सिंहासन; **माणिक्य-सिंहासन**—माणिक्य सिंहासन नामक; **नाम**—नामक; **अनेक**—अनेक; **रतन**—रत्नों से सजाया।

अनुवाद

उस राजा ने विद्यानगर के राजा को हरा दिया और उसके 'माणिक्य सिंहासन' नामक सिंहासन को अपने अधिकार में कर लिया, जिसमें अनेक रत्न जड़े हुए थे।

पुरुषोत्तम-देव सेई बड़ भक्त आर्य ।
गोपाल-चरणे मागे,—'चल मोर राज्य' ॥ १२२ ॥

पुरुषोत्तम-देव सेइ बड़ भक्त आर्य ।
गोपाल-चरणे मागे,—'चल मोर राज्य' ॥ १२२ ॥

पुरुषोत्तम-देव—राजा पुरुषोत्तम देव; **सेइ**—वह; **बड़**—बहुत बड़ा; **भक्त**—भक्त; **आर्य**—आर्य; **गोपाल-चरणे**—गोपाल के चरणकमलों पर; **मागे**—माँगता है; **चल**—कृपया आओ; **मोर**—मेरे; **राज्य**—राज्य में।

अनुवाद

उस राजा का नाम पुरुषोत्तम देव था। वह महान् भक्त था और आर्य सभ्यता में अग्रसर था। उसने गोपाल के चरणकमलों पर याचना की, "कृपा करके मेरे राज्य में चलें।"

তাঁর ভক্তি-বশে গোপাল তাঁরে আজ্ঞা দিল ।
গোপাল লইয়া সেই কটকে আইল ॥ ১২৩॥

তাঁর ভক্তি-বশে গোপাল তাঁরে আজ্ঞা দিল ।
গোপাল লইয়া সেই কটকে আইল ॥ ১২৩॥

তাঁর—उसकी; **भक्ति-वशे**—भक्ति के वश होकर; **गोपाल**—भगवान् गोपाल; **ताँरे**—उनको; **आज्ञा दिल**—आज्ञा दी; **गोपाल**—गोपाल अर्चाविग्रह; **लइया**—लेकर; **सेइ**—वह राजा; **कटके**—कटक नगर को; **आइल**—वापस ले गया।

अनुवाद

जब राजा ने गोपाल से अपने राज्य में चलने के लिए प्रार्थना की, तो गोपाल ने उसकी भक्ति के वश में होकर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। इस तरह गोपाल-विग्रह को वह राजा अपने साथ लेकर कटक लौट गया।

জগন্নাথে আনি' দিল মাণিক্য-সিংহাসন ।
কটকে গোপাল-সেবা করিল স্থাপন ॥ ১২৪॥

জগন্নাথে আনি' দিল মাণিক্য-সিংহাসন ।
কটকে গোপাল-সেবা করিল স্থাপন ॥ ১২৪॥

জগন্নাথে—भगवान् जगन्नाथ को; **आनि'**—लाकर; **दिल**—भेंट किया; **माणिक्य-सिंहासन**—माणिक्य सिंहासन; **कटके**—कटक में; **गोपाल-सेवा**—गोपाल अर्चाविग्रह की सेवा; **करिल स्थापन**—स्थापना की।

अनुवाद

माणिक्य सिंहासन को जीतकर राजा पुरुषोत्तम देव उसे जगन्नाथ पुरी ले आया और उसने उसे जगन्नाथ भगवान् को समर्पित कर दिया। इस बीच उसने कटक में गोपाल की नियमित पूजा भी स्थापित की।

ताँहार महिषी आइला गोपाल-दर्शने ।
भक्ति करि' बहु अलङ्कार कैल समर्पणे ॥ १२५॥

ताँहार महिषी आइला गोपाल-दर्शने ।
भक्ति करि' बहु अलङ्कार कैल समर्पणे ॥ १२५॥

ताँहार महिषी—उसकी रानी; **आइला**—आई; **गोपाल-दर्शने**—गोपाल के दर्शन करने; **भक्ति करि'**—अत्यन्त भक्तिपूर्वक; **बहु**—विविध; **अलङ्कार**—आभूषण; **कैल**—किये; **समर्पणे**—भेंट।

अनुवाद

जब गोपाल-विग्रह की स्थापना कटक में हो गई, तो पुरुषोत्तम देव की रानी उनका दर्शन करने गईं और उसने अत्यन्त भक्ति के साथ अनेक प्रकार के आभूषण भेंट किये।

ताँहार नासाते बहु-मूल्य मुक्ता हय ।
ताहा दिते इच्छा हैल, मनेते चिन्तय ॥ १२६॥

ताँहार नासाते बहु-मूल्य मुक्ता हय ।
ताहा दिते इच्छा हैल, मनेते चिन्तय ॥ १२६॥

ताँहार नासाते—रानी की नाक में; **बहु-मूल्य**—अत्यन्त मूल्यवान; **मुक्ता**—मोती; **हय**—था; **ताहा**—वह; **दिते**—देने के लिए; **इच्छा**—इच्छा; **हैल**—थी; **मनेते**—मन में; **चिन्तय**—सोचती है।

अनुवाद

रानी ने अपनी नाक में अति मूल्यवान मोती पहन रखा था, जिसे वह गोपाल को भेंट करना चाह रही थी। तब वह इस प्रकार सोचने लगी।

ঠাকুরের নাসাতে যদি ছিদ্র থাকিত ।
তবে এই দাসী মুক্তা নাসায় পরাইত ॥১২৭॥

ঠাকুরের নাসাতে যদি ছিদ্র থাকিত ।
তবে এই দাসী মুক্তা নাসায় পরাইত ॥ ১২৭॥

ঠাকুরের নাসাতে—अर्चाविग्रह के नाक में; **যদি**—यदि; **ছিদ্র**—छिद्र; **থাকিত**—होता; **তবে**—तब; **এই**—यह; **দাসী**—दासी; **মুক্তা**—मोती; **নাসায়**—नाक में; **পরাইত**—पहना सकती।

अनुवाद

"यदि विग्रह की नाक में छेद होता, तो मैं अपना मोती उन्हें पहना सकती थी।"

এত চিন্তি' নমস্করি' গেলা স্ব-ভবনে ।
রাত্রি-শেষে গোপাল তাঁরে কহেন স্বপনে ॥১২৮॥

এত চিন্তি' নমস্করি' গেলা স্ব-ভবনে ।
রাত্রি-শেষে গোপাল তাঁরে কহেন স্বপনে ॥ ১২৮॥

এত চিন্তি'—ऐसा सोचकर; **নমস্করি'**—नमस्कार; **গেলা**—गई; **স্ব-ভবনে**—राजा के महल को; **রাত্রি-শেষে**—रात के अन्त में; **গোপাল**—गोपाल अर्चाविग्रह; **তাঁরে**—उसको; **কহেন**—कहते हैं; **স্বপনে**—स्वप्न में।

अनुवाद

यह विचार करके रानी ने गोपाल को नमस्कार किया और वह अपने महल लौट आई। उस रात उसने सपना देखा कि गोपाल प्रकट हुए हैं और उससे कह रहे हैं।

"বাল্য-কালে মাতা মোর নাসা ছিদ্র করি' ।
মুক্তা পরাঞাছিল বহু যত্ন করি' ॥১২৯॥

"বাল্য-কালে মাতা মোর নাসা ছিদ্র করি' ।
মুক্তা পরাঞাছিল বহু যত্ন করি' ॥ ১২৯॥

बाल्य-काले—मेरी बाल्यावस्था में; **माता**—माता ने; **मोर**—मेरी; **नासा**—नाक; **छिद्र करि'**—छिद्र करके; **मुक्ता**—एक मोती; **पराञाछिल**—इसमें डाल दिया; **बहु**—बहुत; **यत्न**—प्रयास; **करि'**—करके।

अनुवाद

"बचपन में मेरी माता ने मेरी नाक में छेद करके उसमें बड़े यत्न से एक मोती पहनाया था।

सेइ छिद्र अद्यापिह आछये नासाते ।
सेइ मुक्ता पराह, याहा चाहियाछ दिते'' ॥१३०॥
सेइ छिद्र अद्यापिह आछये नासाते ।
सेइ मुक्ता पराह, याहा चाहियाछ दिते" ॥१३०॥

सेइ छिद्र—वही छिद्र; **अद्यापिह**—अभी भी; **आछये**—है; **नासाते**—नाक में; **सेइ**—वह; **मुक्ता**—मोती; **पराह**—डाल दो; **याहा**—जो; **चाहियाछ**—तुम चाहती हो; **दिते**—मुझे देना।

अनुवाद

"वह छेद अब भी है। चाहो तो तुम इस छेद का प्रयोग उस मोती को पहनाने के लिए कर सकती हो जिसे तुम मुझे देना चाहती थी।"

स्वप्ने देखि' सेइ राणी राजाके कहिल ।
राजा-सह मुक्ता लञा मन्दिरे आइल ॥१३१॥
स्वप्ने देखि' सेइ राणी राजाके कहिल ।
राजा-सह मुक्ता लञा मन्दिरे आइल ॥१३१॥

स्वप्ने देखि'—स्वप्न देखकर; **सेइ राणी**—रानी ने; **राजाके**—राजा को; **कहिल**—कहा; **राजा-सह**—राजा के साथ; **मुक्ता**—मोती; **लञा**—लेकर; **मन्दिरे**—मन्दिर में; **आइल**—वे गये।

अनुवाद

यह सपना देखने के बाद रानी ने अपने राजा पति से इसकी चर्चा की। तब राजा तथा रानी दोनों ही वह मोती लेकर मन्दिर में गये।

পরাইল মুক্তা নাসায় ছিদ্র দেখিঞা ।
মহা-মহোৎসব কৈল আনন্দিত হঞা ॥ ১৩২॥

পরাইল মুক্তা নাসায় ছিদ্র দেখিঞা ।
মহা-মহোৎসব কৈল আনন্দিত হঞা ॥ ১৩২॥

পরাইল—डाल दिया; **মুক্তা**—मोती; **নাসায়**—नाक में; **ছিদ্র**—छिद्र; **দেখিঞা**—देखकर; **মহা-মহোৎসব**—महा महोत्सव; **কৈল**—मनाया; **আনন্দিত**—आनन्दित; **হঞা**—होकर।

अनुवाद

विग्रह की नाक में छेद देखकर उन्होंने वह मोती वहाँ पहना दिया और अत्यधिक प्रसन्न होकर उन्होंने विशाल उत्सव का आयोजन किया।

সেই হৈতে গোপালের কটকেতে স্থিতি ।
এই লাগি 'সাক্ষি-গোপাল' নাম হৈল খ্যাতি ॥ ১৩৩॥

সেই হৈতে গোপালের কটকেতে স্থিতি ।
এই লাগি 'সাক্ষি-গোপাল' নাম হৈল খ্যাতি ॥ ১৩৩॥

সেই হৈতে গোপালের কটকেতে স্থিতি ।
এই লাগি 'সাক্ষি-গোপাল' নাম হৈল খ্যাতি ॥ ১৩৩॥

সেই হৈতে—उस समय से; **গোপালের**—गोपाल; **কটকেতে**—कटक नगर में; **স্থিতি**—स्थित; **এই লাগি**—इस कारण; **সাক্ষি-গোপাল**—साक्षीगोपाल; **নাম**—नामक; **হৈল**—हो गये; **খ্যাতি**—प्रसिद्ध।

अनुवाद

तभी से गोपाल कटक नगर में विराजमान हैं और तभी से वे साक्षीगोपाल नाम से विख्यात हैं।

নিত্যানন্দ-মুখে শুনি' গোপাল-চরিত ।
তুষ্ট হৈলা মহাপ্রভু স্বভক্ত-সহিত ॥ ১৩৪॥

নিত্যানন্দ-মুখে শুনি' গোপাল-চরিত ।
তুষ্ট হৈলা মহাপ্রভু স্বভক্ত-সহিত ॥ ১৩৪॥

নিত্যানন্দ-মুখে—नित्यानन्द प्रभु के मुख से; **শুনি'**—सुनकर; **গোপাল-চরিত**—गोपाल की कथा; **তুষ্ট হৈলা**—आनन्दित हो गये; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **স্ব-ভক্ত-সহিত**—अपने भक्तों सहित।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोपाल की लीलाओं को सुना। इससे वे तथा उनके भक्त अत्यन्त सन्तुष्ट हुए।

গোপালের আগে যবে প্রভুর হয় স্থিতি ।
ভক্ত-গণে দেখে—যেন দুঁহে এক-মূর্তি ॥১৩৫॥

गोपालेर आगे ग्रबे प्रभुर हय स्थिति ।
भक्त-गणे देखे—ग्रेन दुँहे एक-मूर्ति ॥ १३५ ॥

गोपालेर आगे—गोपाल के समक्ष; **ग्रबे**—जब; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु; **हय**—हैं; **स्थिति**—स्थित; **भक्त-गणे**—सभी भक्तगण; **देखे**—देखते हैं; **ग्रेन**—जैसे; **दुँहे**—वे दोनों; **एक-मूर्ति**—एक विग्रह।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु गोपाल-विग्रह के समक्ष बैठे हुए थे, तो सारे भक्तों ने उन्हें तथा विग्रह को एकरूप देखा।

দুঁহে—এক বর্ণ, দুঁহে—প্রকাণ্ড-শরীর ।
দুঁহে—রক্তাম্বর, দুঁহার স্বভাব—গম্ভীর ॥১৩৬॥

दुँहे—एक वर्ण, दुँहे—प्रकाण्ड-शरीर ।
दुँहे—रक्ताम्बर, दुँहार स्वभाव—गम्भीर ॥ १३६ ॥

दुँहे—वे दोनों; **एक वर्ण**—एक वर्ण; **दुँहे**—वे दोनों; **प्रकाण्ड-शरीर**—विशाल शरीर वाले; **दुँहे**—वे दोनों; **रक्त-अम्बर**—लाल कपड़े; **दुँहार**—दोनों के; **स्वभाव**—स्वभाव; **गम्भीर**—गम्भीर।

अनुवाद

दोनों एक ही वर्ण के तथा एक जैसे विराट शरीर वाले थे। दोनों ने केसरिया वस्त्र पहन रखा था और दोनों ही गम्भीर थे।

মহা-তেজো-ময় দুঁহে কমল-নয়ন ।
দুঁহার ভাবাবেশ, দুঁহে—চন্দ্র-বদন ॥১৩৭॥

महा-तेजो-मय दुँहे कमल-नयन ।
दुँहार भावावेश, दुँहे——चन्द्र-वदन ॥ १३७॥

महा-तेजः-मय—महा तेजस्वी; **दुँहे**—वे दोनों; **कमल-नयन**—कमलनयन; **दुँहार**—दोनों के; **भाव-आवेश**—भावावेश; **दुँहे**—वे दोनों; **चन्द्र-वदन**—चन्द्र जैसे मुख वाले।

अनुवाद

भक्तों ने देखा कि चैतन्य महाप्रभु तथा गोपाल दोनों ही दीप्तिमान तेज से युक्त थे और दोनों के नेत्र कमल जैसे थे। दोनों ही भाव में मग्न थे और उनके मुखमण्डल पूर्णचन्द्रमा सदृश थे।

দুঁহা দেখি' নিত্যানন্দ-প্রভু মহা-রঙ্গে ।
ঠারাঠারি করি' হাসে ভক্ত-গণ-সঙ্গে ॥ ১৩৮॥

দুঁহা দেখি' নিত্যানন্দ-প্রভু মহা-রঙ্গে ।
ঠারাঠারি করি' হাসে ভক্ত-গণ-সঙ্গে ॥ ১৩৮॥

দুঁহা দেখি'—दोनों को देखकर; **নিত্যানন্দ-প্রভু**—नित्यानन्द प्रभु; **মহা-রঙ্গে**—अत्यन्त प्रसन्नता में; **ঠারাঠারি**—संकेत; **করি'**—करके; **হাসে**—हँसते हैं; **ভক্ত-গণ-সঙ্গে**—अन्य भक्तों के साथ।

अनुवाद

जब श्री नित्यानन्द ने श्री चैतन्य महाप्रभु तथा गोपाल-विग्रह दोनों को इस तरह देखा, तो वे भक्तों से परिहास करने लगे जो सबके सब मुस्कुरा रहे थे।

এই-মত মহা-রঙ্গে সে রাত্রি বঞ্চিয়া ।
প্রভাতে চলিলা মঙ্গল-আরতি দেখিঞা ॥ ১৩৯॥

এই-মত মহা-রঙ্গে সে রাত্রি বঞ্চিয়া ।
প্রভাতে চলিলা মঙ্গল-আরতি দেখিঞা ॥ ১৩৯॥

এই-মত—इस प्रकार; **মহা-রঙ্গে**—अत्यन्त हर्ष में; **সে**—वह; **রাত্রি**—रात; **বঞ্চিয়া**—व्यतीत करके; **প্রভাতে**—प्रातः काल; **চলিলা**—चल पड़े; **মঙ্গল-আরতি**—मंगल आरती; **দেখিঞা**—देखने।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने मन्दिर में वह रात बड़े ही आनन्द से बिताई। प्रातःकालीन मंगल आरती देखने के बाद उन्होंने अपनी यात्रा आरम्भ की।

ভুবনেশ্বর-পথে যৈছে কৈল দরশন ।
বিস্তারি' বর্ণিয়াছেন দাস-বৃন্দাবন ॥ ১৪০ ॥

भुवनेश्वर-पथे ग्रैछे कैल दरशन ।
विस्तारि' वर्णियाछेन दास-वृन्दावन ॥ १४० ॥

भुवनेश्वर-पथे—भुवनेश्वर जाते समय; **ग्रैछे**—जैसे; **कैल**—उन्होंने किया; **दरशन**—दर्शन; **विस्तारि'**—विस्तार से; **वर्णियाछेन**—वर्णन किया है; **दास-वृन्दावन**—श्रील वृन्दावन दास ठाकुर ने।

अनुवाद

श्रील वृन्दावन दास ठाकुर ने (अपनी पुस्तक चैतन्य भागवत में) श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा भुवनेश्वर जाते समय देखे गये स्थानों का विस्तार से वर्णन किया है।

तात्पर्य

श्रील वृन्दावनदास ठाकुर ने अपने ग्रंथ *चैतन्य-भागवत* के अन्त्य खण्ड में श्री चैतन्य महाप्रभु की कटक यात्रा का बहुत ही सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है। उस यात्रा में महाप्रभु बालिहस्ता या बालकाटीचटि नामक स्थान गये। तब वे भुवनेश्वर गये, जहाँ शिवमन्दिर स्थापित है। भुवनेश्वर का मन्दिर बालकाटीचटि से लगभग पाँच-छः मील की दूरी पर है। *स्कन्द पुराण* में शिवमन्दिर का उल्लेख भगवान् के उपवन एवं एक आमवृक्ष विषयक कथा में हुआ है। काशिराज नामक एक राजा भगवान् कृष्ण से युद्ध करना चाह रहा था, अतएव उनसे लड़ने की शक्ति प्राप्त करने के लिए उसने शिवजी की शरण ली। उसकी सेवा से प्रसन्न होकर शिवजी ने कृष्ण से युद्ध करने में उसकी सहायता की। शिव का नाम आशुतोष है, जिसका अर्थ यह है कि जब कोई उनकी पूजा करता है, तो वे बहुत शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं, चाहे भक्त किसी भी

उद्देश्य से पूजा करे और भक्त जो भी वर माँगता है, वे उसे देते हैं। अतएव लोग शिवजी की पूजा करने के अतीव इच्छुक रहते हैं। इस प्रकार शिवजी ने काशिराज की सहायता की, किन्तु युद्ध में न केवल वह पराजित हुआ अपितु मारा भी गया। इस तरह पाशुपत अस्त्र व्यर्थ हुआ और कृष्ण ने काशी नगरी में आग लगा दी। बाद में शिवजी को अपनी भूल का आभास हुआ कि उन्होंने काशिराज की सहायता क्यों की, अतएव उन्होंने कृष्ण से क्षमा माँगी। उन्हें वरदान स्वरूप कृष्ण से एकाम्र-कानन नामक स्थान प्राप्त हुआ। बाद में केशरी वंश के राजाओं ने यहाँ अपनी राजधानी स्थापित की और कई सौ वर्षों तक उन्होंने उड़ीसा राज्य में शासन किया।

কমলপুরে আসি ভার্গীনদী-স্নান কৈল ।
নিত্যানন্দ-হাতে প্রভু দণ্ড ধরিল ॥ ১৪১ ॥

कमलपुरे आसि भार्गीनदी-स्नान कैल ।
नित्यानन्द-हाते प्रभु दण्ड धरिल ॥ १४१ ॥

कमल-पुरे—कमलपुर नामक स्थान को; **आसि**—आकर; **भार्गी-नदी**—भार्गी नदी नामक छोटी नदी में; **स्नान कैल**—स्नान किया; **नित्यानन्द-हाते**—नित्यानन्द प्रभु के हाथों में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **दण्ड**—संन्यास का दण्ड; **धरिल**—छोड़ दिया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु कमलपुर पहुँचे, तो उन्होंने भार्गीनदी में स्नान किया। स्नानार्थ जाते समय वे अपना संन्यास-दंड नित्यानन्द प्रभु को देते गये।

तात्पर्य

चैतन्य-भागवत (अन्त्य खण्ड, अध्याय २) में यह कहा गया है कि श्री भुवनेश्वर पहुँचकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने गुप्तकाशी नामक शिव-मन्दिर का दर्शन किया। शिवजी ने समस्त तीर्थों का जल लाकर तथा यहाँ बिन्दु सरोवर उत्पन्न करके इस तीर्थस्थान की स्थापना की थी। श्री चैतन्य महाप्रभु ने शिवजी के प्रति सम्मान के कारण इस सरोवर में स्नान किया। लोग अब भी आध्यात्मिक दृष्टि से इस सरोवर में स्नान करने जाते हैं। वास्तव में यहाँ पर

स्नान करने से भौतिक दृष्टि से भी मनुष्य स्वस्थ हो जाता है'। इस सरोवर में स्नान करने और इसका जल पीने से पेट के सभी रोग दूर हो जाते हैं। नियमित स्नान से कुपच अवश्यमेव अच्छा हो जाता है। भार्गीनदी को चैतन्य महाप्रभु के इस में स्नान करने के बाद से, दण्डभांगा नदी भी कहते हैं। यह जगन्नाथ पुरी से ६ मील उत्तर में स्थित है। नाम में परिवर्तन का कारण अगले श्लोकों में मिलेगा।

कपोतेश्वर देखिते गेला भक्त-गण सङ्गे ।
एथा नित्यानन्द-प्रभु कैल दण्ड-भङ्गे ॥१४२॥
तिन खण्ड करि' दण्ड दिल भासाञा ।
भक्त-सङ्गे आइला प्रभु महेश देखिञा ॥१४३॥

कपोतेश्वर देखिते गेला भक्त-गण सङ्गे ।
एथा नित्यानन्द-प्रभु कैल दण्ड-भङ्गे ॥ १४२ ॥
तिन खण्ड करि' दण्ड दिल भासाञा ।
भक्त-सङ्गे आइला प्रभु महेश देखिञा ॥ १४३ ॥

कपोतेश्वर—कपोतेश्वर नामक शिव मन्दिर; **देखिते**—देखने के लिए; **गेला**—गये; **भक्त-गण सङ्गे**—भक्तों के साथ; **एथा**—यहाँ; **नित्यानन्द-प्रभु**—नित्यानन्द प्रभु ने; **कैल**—किया; **दण्ड**—संन्यास के दण्ड को; **भङ्गे**—तोड़कर; **तिन खण्ड**—तीन टुकड़े; **करि'**—करके; **दण्ड**—दण्ड; **दिल**—फेंक दिया; **भासाञा**—बहाकर; **भक्त-सङ्गे**—भक्तों के साथ; **आइला**—लौट आये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **महेश देखिञा**—शिव मन्दिर देखकर।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु कपोतेश्वर नामक शिव-मन्दिर में गये, तब नित्यानन्द प्रभु ने अपने पास रखे उनके संन्यास-दण्ड के तीन खण्ड करके भार्गी नदी में फेंक दिया। बाद में यह नदी दण्ड-भांगा-नदी कहलाने लगी।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने श्री चैतन्य महाप्रभु के *संन्यास-दण्ड* का रहस्य बतलाया है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने एक मायावादी संन्यासी से संन्यास लिया था। सामान्यतया मायावादी संन्यासी एक दण्ड धारण करते हैं। श्री चैतन्य

महाप्रभु की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर श्रील नित्यानन्द प्रभु ने उस दण्ड को तीन खण्डों में तोड़ डाला और दण्ड-भाँगा-नदी में फेंक दिया। संन्यास आश्रम में चार विभाग होते हैं—*कुटीचक, बहूदक, हंस* तथा *परमहंस*। संन्यासी केवल कुटीचक तथा बहूदक अवस्थाओं में ही दण्ड धारण कर सकता है। किन्तु जब वह भ्रमण करते तथा भक्ति का प्रचार करते हुए *हंस* या *परमहंस* अवस्था को प्राप्त करता है, तो उसे संन्यास-दण्ड का परित्याग कर देना चाहिए।

श्री चैतन्य महाप्रभु साक्षात् भगवान् कृष्ण हैं। इसीलिए कहा गया है—*श्रीकृष्णचैतन्य, राधा-कृष्ण नहे अन्य :* "श्रीमती राधारानी तथा श्रीकृष्ण—ये दो व्यक्तित्व श्री चैतन्य महाप्रभु के अवतार में मिश्रित हैं।" इसलिए श्री चैतन्य महाप्रभु को महापुरुष मानते हुए भगवान् नित्यानन्द ने उनकी *परमहंस* अवस्था की प्रतीक्षा करना उचित नहीं समझा। उन्होंने तर्क दिया कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् स्वयमेव परमहंस अवस्था को प्राप्त हैं, अतएव उन्हें *संन्यास-दण्ड* धारण करने की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए उन्होंने उस दण्ड के तीन खण्ड करके उसे नदी में फेंक दिया।

জগন্নাথের দেউল দেখি' আবিষ্ট হৈলা ।
দণ্ডবৎকরি প্রেমে নাচিতে লাগিলা ॥ ১৪৪॥

जगन्नाथेर देउल देखि' आविष्ट हैला ।
दण्डवत्करि प्रेमे नाचिते लागिला ॥ १४४॥

जगन्नाथेर—भगवान् जगन्नाथ का; **देउल**—मन्दिर; **देखि'**—देखकर; **आविष्ट**—भावावेश में; **हैला**—हो गये; **दण्डवत् करि**—दण्डवत् प्रणाम करके; **प्रेमे**—भगवत् प्रेम के आवेश में; **नाचिते**—नाचने; **लागिला**—लगे।

अनुवाद

दूर से ही जगन्नाथ के मन्दिर को देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु तुरन्त भावाविष्ट हो गये। मन्दिर को दंडवत् प्रणाम करने के बाद वे प्रेमावेश में नृत्य करने लगे।

तात्पर्य

देउल शब्द पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के मन्दिर का सूचक है। जगन्नाथ पुरी

का वर्तमान मन्दिर राजा अनंगभीम ने बनवाया था। इतिहासकारों का कहना है कि यह मन्दिर कम-से-कम २,००० वर्ष पूर्व बना होगा। श्री चैतन्य महाप्रभु के काल में मूल मन्दिर के चारों ओर छोटे भवन नहीं बने थे। न ही तब मन्दिर के सामने का ऊँचा चबूतरा ही बना था।

ভক্ত-গণ আবিষ্ট হঞা, সবে নাচে গায় ।
প্রেমাবেশে প্রভু-সঙ্গে রাজ-মার্গে যায় ॥ ১৪৫ ॥

भक्त-गण आविष्ट हञा, सबे नाचे गाय ।
प्रेमावेशे प्रभु-सङ्गे राज-मार्गे याय ॥ १४५ ॥

भक्त-गण—भक्त गण; **आविष्ट**—भावावेश में; **हञा**—आकर; **सबे**—सभी; **नाचे**—नाचते हैं; **गाय**—गाते हैं; **प्रेम-आवेशे**—भगवत् प्रेम में आकर; **प्रभु-सङ्गे**—चैतन्य महाप्रभु के संग; **राज-मार्गे**—राजमार्ग पर; **याय**—जाते हुए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ साथ सारे भक्त भी भावाविष्ट हो गये और इस तरह भगवत्प्रेम में मग्न होकर वे मुख्य मार्ग पर जाते हुए नाचने तथा गाने लगे।

হাসে, কান্দে, নাচে প্রভু হুঙ্কার গর্জন ।
তিন-ক্রোশ পথ হৈল—সহস্র যোজন ॥ ১৪৬ ॥

हासे, कान्दे, नाचे प्रभु हुङ्कार गर्जन ।
तिन-क्रोश पथ हैल—सहस्र योजन ॥ १४६ ॥

हासे—हँसते; **कान्दे**—रोते; **नाचे**—नाचते; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हुङ्कार**—भावावेश में कांपते; **गर्जन**—गर्जन करते; **तिन-क्रोश**—छः मील; **पथ**—मार्ग; **हैल**—हो गया; **सहस्र योजन**—हजारों मील।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु हँसते, रोदन करते, नाचते तथा भाव में आकर हुँकार कर रहे थे। यद्यपि मन्दिर केवल छह मील दूरी पर था, किन्तु उन्हें यह दूरी हजारों मील लगी।

तात्पर्य

जब श्री चैतन्य महाप्रभु भावावेश में होते, तो उन्हें एक एक क्षण १२ वर्ष के समान लगता। दूर से ही जगन्नाथ मन्दिर को देखकर वे इतने भावाविष्ट हो गये कि उन्हें छह मील का मार्ग हजारों मील लम्बा लगा।

चलिते चलिते प्रभु आइला 'आठारनाला' ।
ताहाँ आसि' प्रभु किछु बाह्य प्रकाशिला ॥ १४७ ॥

चलिते चलिते प्रभु आइला 'आठारनाला' ।
ताहाँ आसि' प्रभु किछु बाह्य प्रकाशिला ॥ १४७ ॥

चलिते चलिते—इस प्रकार चलते चलते; **प्रभु**—महाप्रभु; **आइला**—पहुँचे; **आठारनाला**—अठारनाला स्थान पर; **ताहाँ**—वहाँ; **आसि'**—आकर; **प्रभु**—महाप्रभु ने; **किछु**—कुछ; **बाह्य**—बाहरी चेतना; **प्रकाशिला**—व्यक्त की।

अनुवाद

इस तरह चलते-चलते महाप्रभु आठारनाला नामक स्थान पर पहुँचे। वहाँ आकर उन्होंने श्री नित्यानन्द प्रभु से बातें करते हुए अपनी बाह्य चेतना व्यक्त की।

तात्पर्य

जगन्नाथ पुरी के प्रवेश-द्वार पर आठारनाला नामक एक पुल है, जिसमें अठारह महराबें हैं। (*आठार* का अर्थ है अठारह।)

नित्यानन्दे कहे प्रभु,—देह मोर दण्ड ।
नित्यानन्द बले,—दण्ड हैल तिन खण्ड ॥ १४८ ॥

नित्यानन्दे कहे प्रभु,—देह मोर दण्ड ।
नित्यानन्द बले,—दण्ड हैल तिन खण्ड ॥ १४८ ॥

नित्यानन्दे—श्री नित्यानन्द प्रभु को; **कहे**—पूछा; **प्रभु**—चैतन्य महाप्रभु; **देह**—दो; **मोर**—मेरा; **दण्ड**—संन्यास दण्ड; **नित्यानन्द बले**—नित्यानन्द प्रभु ने उत्तर दिया; **दण्ड**—आपके संन्यास दण्ड के; **हैल**—हो गये; **तिन खण्ड**—तीन भाग।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु को बाह्य चेतना आई, तो उन्होंने श्री

नित्यानन्द प्रभु से कहा, "मेरा दण्ड लौटा दो।" तब नित्यानन्द प्रभु ने उत्तर दिया, "उसके तो तीन खण्ड हो गये हैं।"

প্রেমাবেশে পড়িলা তুমি, তোমারে ধরিনু ।
তোমা-সহ সেই দণ্ড-উপরে পড়িনু ॥ ১৪৯॥

প্রেমাবেশে পড়িলা তুমি, তোমারে ধরিনু ।
তোমা-সহ সেই দণ্ড-উপরে পড়িনু ॥ ১৪৯॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश में; **पड़िला**—गिर गये; **तुमि**—आप; **तोमारे**—आपको; **धरिनु**—मैंने पकड़ लिया; **तोमा-सह**—आपके साथ; **सेइ**—उस; **दण्ड-उपरे**—दण्ड के ऊपर; **पड़िनु**—मैं गिर गया।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु ने कहा, "जब आप भावावेश में गिरे, तो मैंने आपको पकड़ा, किन्तु हम दोनों ही उस दण्ड पर गिर पड़े।

দুই-জনার ভরে দণ্ড খণ্ড খণ্ড হৈল ।
সেই খণ্ড কাঁহা পড়িল, কিছু না জানিল ॥ ১৫০॥

দুই-জনার ভরে দণ্ড খণ্ড খণ্ড হৈল ।
সেই খণ্ড কাঁহা পড়িল, কিছু না জানিল ॥ ১৫০॥

दुइ-जनार—दोनों के; **भरे**—बोझ (वजन) से; **दण्ड**—दण्ड; **खण्ड खण्ड**—टुकड़े टुकड़े; **हैल**—हो गये; **सेइ**—वे; **खण्ड**—टुकड़े; **काँहा पड़िल**—कहाँ गिरे; **किछु**—कुछ; **ना जानिल**—पता नहीं है।

अनुवाद

"इस तरह वह दण्ड हम लोगों के भार से टूट गया। मैं नहीं जानता कि उसके टुकड़े कहाँ गये।

মোর অপরাধে তোমার দণ্ড হইল খণ্ড ।
যে উচিত হয়, মোর কর তার দণ্ড'' ॥ ১৫১॥

মোর অপরাধে তোমার দণ্ড হইল খণ্ড ।
যে উচিত হয়, মোর কর তার দণ্ড" ॥ ১৫১॥

मोर—मेरे; **अपराधे**—अपराध से; **तोमार**—आपका; **दण्ड**—संन्यास दण्ड; **हइल**—हो गया; **खण्ड**—टुकड़े डुकड़े; **ये**—जो कुछ; **उचित**—उचित; **हय**—हो; **मोर**—मुझे; **कर**—दो; **तार**—उसके लिए; **दण्ड**—दण्ड।

अनुवाद

"आपका दण्ड निश्चित रूप से मेरे अपराध के कारण टूटा है। अब आप जो उचित समझें, मुझे दण्ड दें।"

शुनि' किछू महाप्रभु दुःख प्रकाशिला ।
ईषत्क्रोध करि' किछू कहिते लागिला ॥ १५२॥

शुनि' किछु महाप्रभु दुःख प्रकाशिला ।
ईषत् क्रोध करि' किछु कहिते लागिला ॥ १५२॥

शुनि'—यह सुनकर; **किछु**—कुछ; **महाप्रभु**—चैतन्य महाप्रभु; **दुःख**—दुःख; **प्रकाशिला**—व्यक्त किया; **ईषत्**—थोड़ा; **क्रोध**—क्रोध; **करि'**—दिखाकर; **किछु**—कुछ; **कहिते**—बोलने; **लागिला**—लगे।

अनुवाद

जिस तरह से उनका दण्ड टूटा था, उसकी कहानी सुनकर महाप्रभु ने थोड़ा दुःख प्रकट किया और कुछ क्रोध में आकर वे इस प्रकार बोले।

तात्पर्य

श्री नित्यानन्द प्रभु श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा संन्यास ग्रहण किये जाने को व्यर्थ समझते थे। इसीलिए उन्होंने महाप्रभु के द्वारा दण्ड धारण करने की असुविधा समाप्त कर दी। श्री चैतन्य महाप्रभु इसीलिए क्रुद्ध हुए, क्योंकि वे अन्य संन्यासियों को शिक्षा देना चाहते थे कि परमहंस पद प्राप्त करने से पूर्व दण्ड का परित्याग नहीं करना चाहिए। यह देखकर कि ऐसे कार्य से विधानों में ढील आ सकती है, महाप्रभु स्वयं दण्ड धारण किये रहना चाहते थे। किन्तु नित्यानन्द प्रभु ने उसे तोड़ डाला। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु कुछ क्रुद्ध हुए। *भगवद्गीता* (३.२१) में कहा गया है—*यद् यद् आचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः*—जैसा श्रेष्ठ लोग करते हैं, उसी का अनुकरण अन्य लोग करते हैं। परमहंसों का अनुकरण करने का प्रयत्न करने वाले अनुभवहीन प्राकृत भक्तों

की रक्षा करने के उद्देश्य श्री चैतन्य महाप्रभु वैदिक नियमों का दृढ़ता से पालन करना चाह रहे थे।

नीलाचले आनि' मोर सबे हित कैला ।
सबे दण्ड-धन छिल, ताहा ना राखिला ॥ १५३ ॥

नीलाचले आनि' मोर सबे हित कैला ।
सबे दण्ड-धन छिल, ताहा ना राखिला ॥ १५३ ॥

नीलाचले—जगन्नाथ पुरी में; **आनि'**—लाकर; **मोर**—मेरा; **सबे**—आप सबने; **हित**—लाभ (हित); **कैला**—किया; **सबे**—केवल; **दण्ड-धन**—एक दण्ड; **छिल**—था; **ताहा**—वह भी; **ना**—नहीं; **राखिला**—आपने रखा।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "आप लोगों ने मुझे नीलाचल लाकर मुझ पर उपकार किया है। किन्तु वह दण्ड मेरा एकमात्र धन था, जिसे आप लोग संभालकर नहीं रख पाये।

तुमि-सब आगे याह ईश्वर देखिते ।
किबा आमि आगे याइ, ना याब सहिते ॥ १५४ ॥

तुमि-सब आगे याह ईश्वर देखिते ।
किबा आमि आगे याइ, ना याब सहिते ॥ १५४ ॥

तुमि-सब—तुम सब; **आगे**—आगे; **याह**—जाओ; **ईश्वर देखिते**—जगन्नाथ को देखने; **किबा**—अथवा; **आमि**—मैं; **आगे**—आगे; **याइ**—जाता हूँ; **ना**—नहीं; **याब**—मैं जाऊँगा; **सहिते**—आपके साथ।

अनुवाद

"अतएव आप सारे लोग या तो मुझसे पहले या मेरे बाद भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने जाओ। मैं आप लोगों के साथ नहीं जाऊँगा।"

मुकुन्द दत्त कहे,—प्रभु, तुमि याह आगे ।
आमि-सब पाछे याब, ना याब तोमार सङ्गे ॥ १५५ ॥

मुकुन्द दत्त कहे,—प्रभु, तुमि ग्राह आगे ।
आमि-सब पाछे ग्राब, ना ग्राब तोमार सङ्गे ॥ १५५ ॥

मुकुन्द दत्त कहे—मुकुंद दत्त नामक भक्त ने कहा; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **तुमि**—आप; **ग्राह**—जाओ; **आगे**—आगे; **आमि-सब**—हम सब; **पाछे**—पीछे; **ग्राब**—आयेंगे; **ना**—नहीं; **ग्राब**—जायेंगे; **तोमार सङ्गे**—आपके साथ।

अनुवाद

मुकुन्द दत्त ने श्री चैतन्य महाप्रभु से कहा, "हे प्रभु, आप आगे-आगे चलें और अन्यों को पीछे-पीछे चलने की अनुमति दें। हम आपके साथ-साथ नहीं जायेंगे।"

এত শুনি' প্রভু আগে চলিলা শীঘ্র-গতি ।
বুঝিতে না পারে কেহ দুই প্রভুর মতি ॥১৫৬॥

এত শুনি' প্রভু আগে চলিলা শীঘ্র-গতি ।
বুঝিতে না পারে কেহ দুই প্রভুর মতি ॥ ১৫৬ ॥

এত শুনি'—यह सुनकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आगे**—दूसरे भक्तों के आगे; **चलिला**—चलने लगे; **शीघ्र-गति**—तेजी से; **बुझिते**—यह समझने में; **ना**—नहीं; **पारे**—सक्षम; **केह**—कोई भी; **दुइ**—दो; **प्रभुर**—प्रभुओं का; **मति**—आशय।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु अन्य सभी भक्तों के आगे-आगे शीघ्रता से चलने लगे। कोई भी दोनों प्रभुओं—चैतन्य महाप्रभु तथा नित्यानन्द प्रभु—के वास्तविक उद्देश्य को नहीं समझ सका।

ইঁহো কেনে দণ্ড ভাঙ্গে, তেঁহো কেনে ভাঙ্গায় ।
ভাঙ্গাঞা ক্রোধে তেঁহো ইঁহাকে দোষায় ॥১৫৭॥

ইঁহো কেনে দণ্ড ভাঙ্গে, তেঁহো কেনে ভাঙ্গায় ।
ভাঙ্গাঞা ক্রোধে তেঁহো ইঁহাকে দোষায় ॥ ১৫৭ ॥

ইঁহো—नित्यानन्द प्रभु ने; **केने**—क्यों; **दण्ड**—दण्ड; **भाङ्गे**—तोड़ा; **तेंहो**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **केने**—क्यों; **भाङ्गाय**—तोड़ने दिया; **भाङ्गाञा**—तोड़ने देने के बाद; **क्रोधे**—क्रोध में; **तेंहो**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **इँहाके**—श्री नित्यानन्द प्रभु को; **दोषाय**—दोष दिया।

अनुवाद

भक्तगण यह नहीं समझ पाये कि नित्यानन्द प्रभु ने दण्ड क्यों तोड़ा, महाप्रभु ने उन्हें ऐसा क्यों करने दिया और ऐसा करने देने के बाद अब महाप्रभु क्रुद्ध क्यों हो गये।

दण्ड-भङ्ग-लीला एइ—परम गम्भीर ।
सेइ बुझे, दुँहार पदे याँर भक्ति धीर ॥ १५८ ॥

दण्ड-भङ्ग-लीला एइ—परम गम्भीर ।
सेइ बुझे, दुँहार पदे याँर भक्ति धीर ॥ १५८ ॥

दण्ड-भङ्ग-लीला—दण्ड तोड़ने की लीला; **एइ**—यह; **परम**—परम; **गम्भीर**—गम्भीर; **सेइ बुझे**—वही समझ सकता है; **दुँहार**—दोनों के; **पदे**—चरणकमलों पर; **याँर**—जिसकी; **भक्ति**—भक्ति; **धीर**—स्थिर।

अनुवाद

दण्डभंग लीला अत्यन्त गम्भीर है। इसे वही समझ सकता है, जिसकी दोनों प्रभुओं के चरणकमलों पर दृढ़ भक्ति हो।

तात्पर्य

जो व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु तथा श्री नित्यानन्द प्रभु को वास्तव में समझता है, वही उनके स्वरूप तथा दण्डभंग लीला को समझ सकता है। सारे पूर्ववर्ती आचार्यों ने भगवान् की सेवा में पूर्णतया समर्पित होने के लिए प्रेरित होकर भौतिक जीवन की आसक्ति त्यागकर दण्ड धारण किया, जो मनसा-वाचा-कर्मणा भगवान् की सेवा में व्यस्तता का सूचक है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने संन्यास आश्रम के विधानों को स्वीकार किया था। यह बिल्कुल स्पष्ट है। किन्तु परमहंस अवस्था में दण्ड धारण करने की आवश्यकता नहीं रह जाती और श्री चैतन्य महाप्रभु निश्चित रूप से परमहंस थे। किन्तु यह दिखलाने के लिए कि हर एक को जीवन के अन्तिम काल में भगवान् की सेवा में पूर्णरूपेण लगने के लिए संन्यास ग्रहण करना चाहिए, श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके पार्षद जैसे परमहंस भी सदैव विधानों का पालन करते हैं। यही उनका हेतु था। महाप्रभु के नित्य सेवक नित्यानन्द प्रभु का विश्वास था कि श्री चैतन्य महाप्रभु को दण्ड धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, इसीलिए संसार को यह

बताने के लिए कि श्री चैतन्य महाप्रभु समस्त विधानों के ऊपर हैं, उन्होंने दण्ड के तीन खण्ड कर डाले। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने दण्ड-भंग-लीला का इस प्रकार वर्णन किया है।

ब्रह्मण्य-देव-गोपालेर महिमा एइ धन्य ।
नित्यानन्द—वक्ता यार, श्रोता—श्री-चैतन्य ॥ १५९॥

ब्रह्मण्य-देव-गोपालेर महिमा एइ धन्य ।
नित्यानन्द—वक्ता यार, श्रोता—श्री-चैतन्य ॥ १५९॥

ब्रह्मण्य-देव—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् जो ब्राह्मणों पर दयालु हैं; **गोपालेर**—गोपाल की; **महिमा**—महिमाएँ; **एइ**—ये; **धन्य**—धन्य; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **वक्ता**—वक्ता; **यार**—जिसके; **श्रोता**—श्रोता; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

ब्राह्मणों पर कृपालु रहने वाले भगवान् गोपाल की महिमा अपार है। साक्षीगोपाल की यह कथा नित्यानन्द प्रभु द्वारा सुनाई गई और इसके श्रोता थे श्री चैतन्य महाप्रभु।

तात्पर्य

साक्षीगोपाल की कथा में चार शिक्षाओं पर विचार करना चाहिए। प्रथम—श्री गोपाल का अर्चाविग्रह सच्चिदानन्द स्वरूप है। दूसरा—अर्चाविग्रह भौतिक विधि-विधानों से परे हैं तथा वे दिव्य विधानों की स्थापना करते हैं। तीसरा—ब्राह्मण होने पर दिव्य पद मिल सकता है, किन्तु ब्राह्मण बनकर विधि-विधानों का दृढ़ता से पालन करना होगा। चौथा—ब्रह्मण्य-देव साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण का सूचक है, जिनकी पूजा इस प्रकार की जाती है—*नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च/ जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।* इससे सूचित होता है कि जो भक्त कृष्ण के संरक्षण में रहता है, वह स्वतः ब्राह्मण-पद पर स्थित होता है और ऐसा ब्राह्मण कभी मोहग्रस्त नहीं होता। यह सत्य है।

श्रद्धा-युक्त हञा इहा शुने येइ जन ।
अचिरे मिलये तारे गोपाल-चरण ॥ १६०॥

श्रद्धा-युक्त हञा इहा शुने येइ जन ।
अचिरे मिलये तारे गोपाल-चरण ॥ १६० ॥

श्रद्धा-युक्त—श्रद्धा युक्त; **हञा**—होकर; **इहा**—यह कथा; **शुने**—सुनता है; **येइ**—जो; **जन**—व्यक्ति; **अचिरे**—अति शीघ्र; **मिलये**—पाता है; **तारे**—वह; **गोपाल-चरण**—भगवान् गोपाल के चरणकमल।

अनुवाद

जो व्यक्ति श्रद्धा तथा प्रेमपूर्वक गोपाल के इस आख्यान को सुनता है, उसे शीघ्र ही गोपाल के चरणकमल प्राप्त होते हैं।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १६१ ॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १६१ ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों में; **यार**—जिसकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—चैतन्य चरितामृत; **कहे**—वर्णन करना; **कृष्ण-दास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप और श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा उनकी कृपा की सदैव कामना करते हुए मैं कृष्णदास उनके चरणचिह्नों पर चलते हुए श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत मध्यलीला के पंचम अध्याय का, जिसमें साक्षीगोपाल के कार्यकलापों का वर्णन है, भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ ।